इकाई 6 भारत में अंतः–सांस्कृतिक विविधताएं*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 नातेदारी पहलू अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं का आधार

6.3 वंश प्रतिरूपों में परिवर्तन

6.3.1 उत्तर क्षेत्र में मुख्य रूप से पितृवंशीय प्रणाली

6.3.2 पूर्व क्षेत्र की मिश्रित पितृवंशीय और मातृवंशीय प्रणाली

6.3.3 दक्षिण क्षेत्र की मुख्य रूप से पितृवंशीय फिर भी मातृवंशीय प्रणाली

6.3.3.1 केरल के नायर

6.3.3.2 कनारा के बंट और बिलावस

6.3.3.3 केरल के नंबूदरी ब्राह्मण

6.4 नातेदारी शर्तेः उत्तर क्षेत्र में वर्णनात्मक बनाम दक्षिण क्षेत्र में वर्गीकरण प्रणाली

6.5 विवाह के नियम

6.5.1.1 उत्तर क्षेत्रः कबीला बहिर्विवाह, चार–कबीला नियम, अंतर्विवाह के नियम

6.5.1.2 उलटाव न होने का नियम

6.5.1.3 दोहराव न करने का नियम

6.5.1.4 मध्य क्षेत्रः अंतः–कज़न विवाह और अन्य विविधताएं

6.5.1.5 दक्षिण क्षेत्रः पसंदीदा वैवाहिक गठबंधन बनाम प्रतिबंध

6.6 उपहारों का औपचारिक आदान–प्रदान

*योगदानः गितांजली अत्री, स्वतंत्र शोधकर्ता और डॉ. अर्चना प्रसाद, दिल्ली विश्वविद्यालय।

6.6.1 उत्तर में उपहारों का अधिकतर एक–दिशा प्रवाह

6.6.2 दक्षिण में उपहारों का पारस्परिक आदान–प्रदान

6.7 सारांश

6.8 संदर्भ

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बाते समझ सकेंगेः

- भारत में नातेदारी पैटर्न में अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं के आधार की व्याख्या;
- विभिन्न संस्कृतियों में प्रचलित विभिन्न प्रकार की वंशावली का वर्णन;
- विभिन्न संस्कृतियों में विभिन्न नातेदारी शब्दावली और उनके प्रमुख कार्यों की व्याख्या;
- संस्कृतियों में वैवाहिक नियमों में भिन्नता का विवेचन; और
- विभिन्न संस्कृतियाों में औपचारिक उपहारों के आदान–प्रदान का वर्णन।

6.1 प्रस्तावना

नातेदारी सामाजिक व्यवस्था की मूल इकाई है, जब कोई व्यक्ति ऐसे रिश्तों में प्रवेश करता है, तो उस सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है। इस व्यवस्था को समाजशास्त्रियों ने नातेदारी व्यवस्था कहा है।

एक नातेदारी प्रणाली में निश्चित मानदंड, नियम और पैटर्न होते हैं, जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होते हैं। इसलिए, एक सार्वभौमिक नातेदारी प्रणाली जैसा

कुछ नहीं है। इसलिए समाजशास्त्री मानते हैं कि नातेदारी व्यवस्था मूल रूप से एक सांस्कृतिक व्यवस्था है। एक व्यक्ति को उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में स्थिति के आधार पर नातेदारियां, भूमिकाएं और जिम्मेदारियां मिलती हैं। हालांकि, भारत में व्यक्तियों के समाजीकरण के लिए नातेदारी व्यवस्था आवश्यक बनी हुई है, नातेदारी व्यवस्था की क्षेत्रीय संरचना में काफी भिन्नता है। साथ ही, इन व्यवस्थाओं के मानदंड और पैटर्न या प्रतिरूप में अद्वितीय विविधताएं हैं। इन विविधताओं पर इस इकाई में आगे विचार किया जाएगा।

इस इकाई के प्रयोजन के लिए, भारत के चार क्षेत्रों में, नातेदारी पैटर्न के अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है (तालिका 6.1–कर्वे के 1953 के ऐतिहासिक मोनोग्राफ, 'भारत में नातेदारी संगठन' (Kinship Organisation in India by Karve)

क्र.सं	क्षेत्र	राज्य/भाषाएं/समुदाय
1	उत्तर	प्रमुख भाषाएंः हिंदी, बिहारी, सिंधी, पहाड़ी, पंजाबी, असमिया और बंगाली
2	मध्य	राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र और ओडिशा
3	पूर्वी	प्रमुख समुदायः कोरकू, असामी, साका, भूमिज, मुंडा, सेमांग और असम, झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के कुछ हिस्सों के खासी समुदाय
4	दक्षिणी	कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल

तालिका 6.1. भारत में नातेदारी पैटर्न की क्षेत्रीय विविधताएं

6.2 नातेदारी पहलू: अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं का आधार

भारतीय नातेदारी के क्षेत्र में काम करने वाले समाजशास्त्रियों ने कुछ निश्चित पहलू निर्धारित किए हैं, जो इस प्रणाली की बुनियादी विशेषताएँ हैं। इनमें शामिल हैं – वंश पैटर्न, नातेदारी शब्दावली, विवाह नियम और उपहारों का आदान–प्रदान। ये पहलू परिवार और समाज में विभिन्न संबंधों की भूमिका और कर्तव्य आवंटन के लिए आवश्यक हैं। भारतीय संदर्भ में, इन पहलूओं के कारण व्यक्ति को अपने सामाजिक स्थान जैसे वंश, कुल और गोत्र का ज्ञान होता है। ये पहलू विवाह, विरासत और धार्मिक आचरण के नियमों को निर्धारित करते हैं।

इन पहलूओं के बिना, कोई यह कभी नहीं जान सकता कि दूसरे व्यक्ति उससे कैसे संबंधित हैं। नातेदारी पहलू, न केवल किसी के जीवन की सामाजिक संरचना, बल्कि आर्थिक पहलुओं जैसे संपत्ति, भूमि और उत्पादन के अन्य साधनों के अधिकार को प्रभावित करते हैं। इन निर्धारित व्यवहार पैटर्न के साथ, नातेदारी पहलू सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिबन्धों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। यह नातेदारी पहलू विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की संस्कृति, भाषा और धर्म के आधार पर भिन्न हैं। और, इस संदर्भ में ,प्रत्येक नातेदारी पहलू में विभिन्न पहलू हैं, जो क्षेत्रीय विविधता सुनिश्चित करते हैं। आइए, अब इन विविधताओं को देखें।

बोध प्रश्न 1

1. नातेदारी व्यवस्था के चार पहलू कौन–से हैं, जो अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं की नींव रखते हैं?

6.3 वंश प्रतिरूपों में परिवर्तन

नातेदारी प्रणाली को मनुष्यों के एक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो या तो रक्त संबंध या विवाह के आधार पर एक–दूसरे से संबंधित होते हैं। इस परिभाषा के अनुसार, किसी भी नातेदारी व्यवस्था के भीतर, ऐसे लोग हैं, जो समान वंश में आते हैं। हालाँकि, कभी–कभी ऐसे संबंध भी नातेदारी का हिस्सा बन जाते हैं, जो किसी व्यक्ति से रक्त या विवाह से संबंधित नहीं होते हैं, जो समाज स्वीकृति पर निर्भर करते है। उदाहरण के लिए लें: गोद लिए गए बच्चे का केस। भले ही बच्चे का किसी व्यक्ति से खून का रिश्ता न हो, लेकिन चूंकि उनके रिश्ते को समाज और कानून ने स्वीकार कर लिया है, इसलिए वे एक–दूसरे के करीबी नातेदार बने रहते हैं। ऐसी व्यवस्था का कारण यह है कि नातेदारी एक सामाजिक तथ्य है, जिसमें सामाजिक और कानूनी स्वीकृति प्राप्त करना नातेदारी व्यवस्था के अस्तित्व के लिए मौलिक है। हमारे समाज में नातेदारी का उपयोग सामाजिक इकाइयों की स्थापना के लिए किया जाता है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति ऐसे सहयोगी और घनिष्ठ रूप से बंधे हुए लोगों के समूह का सदस्य है। ऐसे सहयोगी स्थानीय समूह हमेशा पति–पत्नी और उनके बच्चों के मूल परिवारों से बड़े होते हैं। लेकिन, ऐसी इकाइयों के अस्तित्व के लिए कोई सार्वभौमिक नियम नहीं हैं। अलग–अलग समाजों में नियम अलग–अलग होते हैं।

6.3.1 उत्तर क्षेत्र में मुख्य रूप से पितृवंशीय प्रणाली

इस क्षेत्र में, वंश का सबसे सामान्य रूप एक–तरफा (Unilineal) वंश है, यानी पुरुष वंश पर आधारित – पिता से पुत्र तक, जिसे विरासत के 'मिताक्षरा' स्कूल (Mitakshara School of Inheritance) के रूप में जाना जाता है। यह वंश के सदस्यों के बीच सहयोग, संघर्ष, संपत्ति के उत्तराधिकार और स्थिति का आधार बनता है। सदस्य धार्मिक अनुष्ठानों और आर्थिक मामलों में सहयोग करते हैं, जिसमें सबसे अधिक महत्व वंश के वृद्ध पुरुषों को दिया जाता है। अतीत में किए गए मानवशास्त्रीय अध्ययनों के अनुसार, एक वंश के सदस्यों के बीच सहयोग इसलिए होता है, क्योंकि वे सभी एक ही गाँव में एक साथ रहते हैं। हालाँकि, वैश्वीकरण, शहरीकरण और औद्योगिक क्रांति आदि जैसी सार्वभौमिक घटनाओं की वजह से प्रवासन के कारण यह प्रवृत्ति धीरे–धीरे बदल गई है। फिर भी, एक वंश के सदस्य अपने आर्थिक दायित्वों के कारण एकजुट रहते हैं, जिसमें उन्हें एक मात्र वंशीय रेखा से संपत्ति विरासत में मिलती है। उत्तर भारत में, संपत्ति आम तौर पर पुरुषों को विरासत में मिलती है।

6.3.2 पूर्व क्षेत्र की मिश्रित पितृवंशीय और मातृवंशीय प्रणाली

पूर्वी क्षेत्र भौगोलिक रूप से बिखरा हुआ है और इसमें अन्यजन जातियों के अलावा ज्यादातर ऑस्ट्रो–एशियाई (Austro-Asiatic) जनजातियां शामिल हैं, जैसे भूमिज, कोरकू, खासी और संथाल (Bhumij, Korku, Khasi and Santhal)। इनमें से, झारखंड की भूमिज और मुंडा जनजातियां पितृवंशीय परम्परा का पालन करती हैं और असम की खासी जनजाति विशिष्ट रूप से मातृवंशीय परम्परा का पालन करती हैं। उनके प्रथागत कानून के अनुसार, संपत्ति, विशेष रूप से कृषि भूमि, पुरुषों को विरासत में मिलती है और महिलाओं के पास भूमि या संपत्ति का

कोई उत्तराधिकार नहीं है। इन संस्कृतियों में, संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों को प्राथमिकता दी जाती है, हालाँकि पति अक्सर अपनी विधवा माँ या अविवाहित भाइयों को अपने साथ रखता है। ऐसी व्यवस्था में, एक–समान वंश के एकल परिवारों के बीच पितृवंशीय संबंध पूर्वजों की पूजा के एक समान स्थान के माध्यम से बनाए जाते है, और एक दूसरे के संकट के क्षणों में सहयोग दिया जाता है। दूसरी ओर, मातृवंशीय खासी जनजातियां एक अद्वितीय संयुक्त परिवार प्रणाली का पालन करती हैं और उनके पूजा के स्थान और शमशान के स्थान एक ही स्थान पर होते हैं। पति–पत्नी अपने–अपने अलग घर में रहते हैं। इस संस्कृति में, परिवार के मुखिया की मृत्यु के बाद संपत्ति मां या सबसे छोटी बेटी को हस्तांतरित हो जाती है। जब विधवा पुनर्विवाह नहीं करने का विकल्प चुनती है, तो विधवा को संपत्ति का आधा हिस्सा मिल जाता है, अगर परिवार के भीतर कोई महिला संपत्ति की वारिस नहीं है।

6.3.3 दक्षिण क्षेत्र की मुख्य रूप से पितृवंशीय फिर भी मातृवंशीय प्रणाली

परिवार संगठन और नातेदारी प्रणाली प्रतिरूप इस क्षेत्र में एक बहुत ही जटिल व्यवस्था है। उत्तरी क्षेत्र की तरह, यहाँ भी पितृवंशीय व्यवस्था प्रमुख है, हालाँकि कुछ वर्ग अपने वंश के नियमों में मातृवंशीय रहते हैं। केरल में नायर, कनारा में बंत और बिलावस, और तियान (Nayar, Bant and Billawas and Tiyans) और दक्षिण के मालाबार क्षेत्रों में कुछ मोपला (Moplas) मातृवंशीय रहते हैं।

6.3.3.1 केरल के नायर

केरल के नायरों के लिए अद्वितीय मातृवंशीय व्यवस्था को 'मरुमक्कट्टयम' (Marumakkattayam)के रूप में जाना जाता है, जिसमें महिलाओं को सम्मान,

शक्ति और प्रतिष्ठा और परंपरागत रूप से संपत्ति का अधिकार मिला है। इस प्रणाली में, परिवार के घर को 'थारवड' (Tharavad) कहते हैं, जिसमें माँ, बच्चे, उसके भाई और बहन रहते हैं। भले ही वंश माँ के माध्यम से चलता है, लेकिन घर का मुखिया सबसे बड़ा भाई या 'कर्णवर' (Karnavar) होता है। लेकिन, संपत्ति का स्वामित्व संयुक्त होता है। दिलचस्प बात यह है कि कर्णवर' की संपत्ति उसके भतीजे को विरासत में मिलती है, न कि उसके अपने बच्चों को। हालाँकि, आधुनिकीकरण और सर्वदेशीयता की स्थापना के साथ, और नायर पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के प्रवासन के कारण केरल में 'मरुमक्कट्टयम' (Marumakkattayam) लुप्त होता जा है। ये सभी घटनाक्रम, संयुक्त परिवार प्रणाली के पक्ष में नहीं गए हैं। इन सामाजिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, कई संयुक्त परिवार धीरे–धीरे 'मक्कट्टयम' (Makkattayam) प्रणाली का पालन कर रहे हैं, जिसका अर्थ है पुरुष वंश के माध्यम से विरासत। लेकिन, कुछ नायर परिवारों में मां के उपनाम, परिवार का पुराना नाम और खिताब रखने की प्रथा अभी भी बनी हुई है, जो पुरानी 'मरुमक्कट्टयम' (Marumakkattayam) प्रणाली के प्रति उनकी आत्मीयता को प्रदर्शित करती है।

6.3.3.2 कनारा के बंट और बिलावस

कर्नाटक में ये जनजातियां और जैनियों के गैर–पुजारी वर्ग कानून की एक प्रणाली 'अलियासंथान' (Aliyasanthan) के अंर्तगत आते हैं, जिसे हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम द्वारा स्वीकृत किया गया है। इस कानून के अनुसार, परिवार के भीतर संपत्ति के वारिस का अधिकार और अन्य सभी अधिकार मातृवंशीय परम्परा के माध्यम से चलते हैं। उदाहरण के लिएः माता के पैतृक घर का नाम आम तौर पर किसी के नाम का उपसर्ग या प्रत्यय (Prefix or Suffix) बन जाता है, और बंट् लोगो के कुछ उपनाम भी माता की ओर से आते हैं। तो

जाहिर सी बात है कि इस व्यवस्था के तहत परिवार के मातृ पक्ष को अधिक सम्मान दिया जाता है। माता के भाई को पिता के भाई से ज्यादा सम्मान मिलता है।

6.3.3.3 केरल के नंबूदरी ब्राह्मण

ये, फिर से पितृवंशीय, एक मातृवंशीय समाज का एक दिलचस्प विषय प्रस्तुत करते हैं। जिस पितृवंश में वे रहते थे, उसे पारंपरिक रूप से मलयाली में 'इलम' (Illam) के नाम से जाना जाता है।'इलम' पैतृक संपत्ति पर एक शमशान भूमि और एक पवित्र सर्प बाग (Grove) के साथ स्थित था। एक 'इलम' के भीतर, केवल सबसे बड़े बेटे को नंबूदरी लड़की से शादी करने की अनुमति थी। छोटे बेटे नायर जाति की लड़कियों के साथ संबंदामोर (Sambandamor) संपर्क बनाते थे। उनकी संस्कृति के अनुसार, छोटे बेटे रात में अपने साथियों से मिलने जाते थे, और इस मिलन से जन्मे बच्चे अपनी माँ के तरावड़ (Taravad) या थरवडु (Tharavadu) का हिस्सा बन जाते थे, जिसकी चर्चा हमने पहले की है। परंपरागत रूप से, नंबूदरी 'इलम' में सबसे बड़ा बेटा और उसकी पत्नी, छोटे भाई, कभी–कभी उसके बूढ़े माता–पिता या बड़े बेटे के बच्चे शामिल होते थे।

यद्यपि, इस खंड ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वंशावली पैटर्न में भिन्नता का एक रेखाचित्र बनाने की कोशिश की है, लेकिन संस्कृति के मामलों में,सख्ती और लचीलापन दोनों ही, वंश की वास्तविक नातेदारी प्रथाओं में साथ–साथ चलते हैं। ये बदलते पारिवारिक ढांचे, निवास और वंश की व्यवस्था, संपत्ति की विरासत और उत्तराधिकार, आदि में परिलक्षित होते हैं। हालाँकि, गतिशीलता, शिक्षा और प्रवास के कारण उत्पन्न अपनी सभी जटिलताओं के बावजूद, सामाजिक संगठन

और लामबंदी के मामले में नातेदारी सबसे बुनियादी इकाई बनी हुई है।

बोध प्रश्न 2

1. वंश के उत्तर भारतीय पैटर्न पूर्व में पाए जाने वाले पैटर्न से कैसे भिन्न हैं?

_____

_____

_____

_____

2. दक्षिणी भारत में वंश व्यवस्था की अनूठी विशेषताएं क्या हैं? प्रमुख उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।

_____

_____

_____

_____

_____

6.4 नातेदारी शर्तेः उत्तर क्षेत्र में वर्णनात्मक बनाम दक्षिण क्षेत्र में वर्गीकरण प्रणाली

_____

नातेदारी की शर्तें किसी भी नातेदारी प्रणाली की विशेषताओं को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरण के लिए, जिस तरह से लोगों को किसी भी प्रणाली में संदर्भित किया जाता है, उससे हमें उस प्रणाली में विधियों और प्रतिबन्धों ,लोगों की भूमिकाएं, नातेदारी की श्रेणी के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। इस खंड में, हम क्रमशः उत्तर और दक्षिण में नातेदारी शब्दावली की

निम्नलिखित दो श्रेणियों के बारे में चर्चा करेंगे – संबोधन की शर्तें और संदर्भ की शर्तें। संबोधन की शर्तें वे हैं, जिनका उपयोग लोग एक दूसरे को संबोधित करने में करते हैं। संदर्भ की शर्तें वे हैं, जिनके द्वारा लोग विशेष संबंधों का उल्लेख करते हैं। हालांकि, कभी–कभी इन दो प्रकारों को केवल एक श्रेणी का उपयोग करके व्यक्त किया जा सकता है। आइए, अब हम इन श्रेणियों में अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं पर विचार करें।

6.4.1 वर्णनात्मक उत्तर

उत्तर में, नातेदारी शब्दों का प्रयोग वक्ता के दृष्टिकोण से नातेदारी संबंध का वर्णन करने के लिए किया जाता है। इस तरह की शब्दावली का वर्णनात्मक चित्रण इतना मजबूत है कि कुछ ही शब्दों में, यहां तक कि सबसे दूर के नातेदारों को भी उचित रूप से वर्णित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आँटी, अंकल, नैफ्यू (Nephew), कजिन (Cousin) आदि जैसे अंग्रेजी शब्द सटीक संबंध को प्रकट नहीं करते हैं; जैसे परिजनवक्ता के पितृ–पक्ष से है या मातृ–पक्ष से, परिजन वक्ता से छोटा है या बड़ा आदि। लेकिन उत्तर भारत में, इन मापदंडों पर नातेदारी की शर्तें बहुत स्पष्ट हैं। आइए, कुछ उदाहरणों पर विचार करें: पितृवंशीय वंश पर जोर देने के लिए, समानांतर और अंतः–कज़न (चचेरे व ममेरे भाई–बहनों के बीच) के संबोधनों में अंतर देखा जाता है। एक भाई के बच्चे भतीजा (पुरुष बच्चे के लिए) और भातीजी (महिला बच्चे के लिए) हैं। एक की बहन के बच्चे भांजा (पुरुष बच्चे के लिए) और भांजी (महिला बच्चे के लिए) हैं। इसी तरह, जब कोई चचेरा भाई कहता है, तो इसे आसानी से वक्ता के पिता के छोटे भाई (चाचा) के बेटे के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। दूसरी ओर, ममेरा भाई का अर्थ है माँ के भाई (मामा) का पुत्र। नातेदारी की शब्दावली भी विशेष नातेदारों से अपेक्षित व्यवहार को इंगित करती है। यह नातेदारी समूह में

निर्धारित और वर्जित व्यवहार को इंगित करता है। आइए, हम उत्तर भारतीय परिवार में 'मजाक' और 'परिहार' (Joking and Avoidance) के लोकप्रिय संबंधों के उदाहरणों को लें। देवर–भाभी का रिश्ता 'मजाक' के रिश्ते का प्रतीक है, क्योंकि देवर भाभी को अपनी मां के समान मानता है। एक महिला का संबंध अपने ससुर या श्वासुर (Father-in-law) के साथ और अपने पति के बड़े भाई यानी जेठ या भासुर के साथ परिहार का है। इस तरह के रिश्ते के कारण, उत्तरी भारत के अधिकांश हिस्सों में घूंघट या पर्दा प्रथा अभी भी बहुत आम है।

6.4.2 वर्गीकृत दक्षिण

द्रविड़ नातेदारी को वर्गीकृत कहा जाता है, क्योंकि यह वक्ता की अपनी पीढ़ी को निम्नलिखित दो श्रेणियों में विभाजित करता है। एक समूह में सभी भाई–बहन होते हैं, जिनमें अपने समानांतर कजिन और पिता के समानांतर कजिन के बच्चे शामिल हैं। नातेदारी की इस श्रेणी को तमिल में 'पंगली' (Pangali) के नाम से जाना जाता है। और, दूसरे समूह में अंतः–कजिन और करीबी रिश्तेदार जैसे कि भाई–बहनों की पत्नी/पति शामिल हैं। तमिल में, नातेदारी की इस श्रेणी को 'मामा–मच्छिनन' (Mama-Machchinan) शब्द से जाना जाता है। यह व्यापक वर्गीकरण किसी की अपनी पीढ़ी में नातेदारों की पूरी श्रृंखला पर लागू होता है। नातेदारों की कोई तीसरी श्रेणी नहीं है। तमिल में, पंगली (Pangali) का अर्थ है, वो जो साझा करते हैं। इस शब्द में दोनों – विशिष्ट और सामान्य अर्थ हैं। यह विशिष्ट रूप से उन लोगों को संदर्भित करता है, जो संयुक्त परिवार की संपत्ति में हिस्सेदार होते हैं। और अधिक सामान्य अर्थ में, इसमें वे भाई भी शामिल हैं, जो संयुक्त परिवार की संपत्ति, में हिस्सेदार नहीं हैं। ऐसे नातेदारों को एक अन्य तमिल शब्द 'मुरी' (Murei) के नाम से जाना जाता है।

पंगली और मुरी के बीच का यह वर्गीकरण उन लोगों पर भी लागू होता है, जो आगे चलकर अपने ही संबंधियों से जुड़े होते हैं। दक्षिण की नातेदारी प्रणाली पूरी तरह अपने नातेदारों के इन दो श्रेणियों में से एक या दूसरे में वर्गीकरण पर टिकी हुई है। इसलिए, यदि A और B घनिष्ठ रूप से संबंधित है, B और C भी घनिष्ठ रूप से संबंधित है तो A और C के बीच का संबंध मुरी, पंगली या एक वर्गीकृत भाई के सूत्रीकरण के आधार पर किया जाता है। यहाँ नातेदारी का तर्क बहुत बुनियादी है–कोई भी जो आपसे संबंधित है, लेकिन आपका 'मामा–मच्छिनन' (Mama-Machchinan) नहीं है, तो वह आपके लिए या तो मुरी या पंगली होना चाहिए। इसी प्रकार, बड़े और छोटे नातेदारों को अलग करके, अपनी पीढ़ी और अपने पिता की पिछली पीढ़ी दोनों को दो भागों में विभाजित किया जाता है। उदाहरण के लिएः तमिल में, अपने से बड़े भाइयो, बहनों और समानांतर कजिन को अन्नन/अक्का (Annan/Akka) कहा जाता है, और अपने से छोटे होते हैं उन्हें तंबी/तंगची (Tambi/Tangaichi) कहा जाता है। इसी तरह, अपने पिता से बड़े सभी भाई–बहन और समानांतर कजिन को पेरियाप्पा/पेरियाम्मा (Periyappa/Periyamma) कहा जाता है और अपने पिता से छोटे सभी भाई–बहन और समानांतर कजिन को चित्तप्पा/सिन्नप्पा/चिति/सिन्नम्मा (Chittappa/Sinnappa/Chithi/Sinnamma) कहा जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि किसी की अधिक पुरानी पीढ़ी में जैसे कि दादा–दादी/नाना–नानी की पीढ़ी में, लिंग भेद को गठबंधन भेद के साथ जोड़ा जाता है। दूसरे शब्दों में, यदि एक गठबंधन संबंध स्थापित करने के लिए एक भेद महत्वपूर्ण नहीं है, तो इसे विलय कर दिया जाता है। उदाहरण के लिएः किसी के नातियों की पीढ़ी में, बेटी के बच्चों और बेटे के बच्चों के बीच कोई

अंतर नहीं किया जाता है। तमिल में, दोनों प्रकार के नातेदारों, पोते को पेरण (Peran) और पोती को पित्ती (Peththi) कहा जाता है। इसी तरह, नाना और दादा दोनों को ताता (Tata) शब्द से जाना जाता है; और, नानी और दादी दोनों को पाटी (Patti) कहा जाता है। मानवविज्ञानिकों के अनुसार, दादा–दादी/नाना–नानी और पोते–पोतियों की पीढ़ियों में लिंग भेद के विलय की इस तरह की प्रवृत्ति से गठबंधन संबंध की सीमाएं समाप्त हो गयी हैं। नातेदारों के पैतृक और मातृ दोनों पक्षों को एक श्रेणी में रखा जा सकता है।

बोध प्रश्न 3

1. नातेदारी की वर्णनात्मक शब्दावली क्या है? उत्तर भारत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

_____

_____

_____

_____

2. दक्षिण भारत के वर्गीकरण संबंधी नातेदारी का वर्णन कीजिए।

_____

_____

_____

_____

गतिविधि 1

अपने परिवार में प्रयुक्त होने वाली नातेदारी शब्दावली की सूची बनाइए। उदाहरण के लिए, जिन सम्बोधनों के साथ आप अपनी माँ, अपने पिता, पिता के पिता, पिता के भाई, पिता की बहन, पिता की बहन के पति, पिता की बहन के बेटे और बेटी, पिता के भाई के बेटे और बेटी, पिता के भाई की पत्नी अपनी माता के पिता, माता के भाई, माता के भाई के पुत्र और पुत्री, माता के भाई की पत्नी, माता की बहिन, माता की बहिन का पति, माता की बहिन के पुत्र और पुत्रीका उल्लेख करते हैं। सूची बनाने के बाद, उनमें से कुछ के बीच निर्धारित नातेदारी संबंधों को लिखने का प्रयास करें, जैसा कि हमने विशेष रूप से उत्तर भारत में देवर–भाभी के बीच मजाक के संबंध के बारे में चर्चा की थी। यदि संभव हो तो अपनी इस सूची की तुलना अपने अध्ययन केंद्र के अन्य लोगों से करें, और अपनी सांस्कृतिक विविधताओं के आधार पर समानताएं और अंतर का उल्लेख करें।

6.5 विवाह के नियम

विवाह ही वह आधार है, जिस पर किसी भी नातेदारी संरचना का निर्माण होता है। एक परिवार में प्रत्येक विवाह के साथ, नए नातेदारी बंधन बनते हैं। पारिवारिक संबंध विवाह के नियमों के द्वारा संचालित होते हैं, अर्थात उन लोगों की श्रेणियों के भीतर, जिन्हें नातेदारी समूहों में एक–दूसरे से शादी करने की अनुमति या मनाही है। विवाह की संस्था वर–वधू के परिवारों के बीच के संबंधों को भी निर्धारित करती है, जो एक नातेदारी संरचना को बढ़ाने और मजबूत करने में योगदान करती है। इसलिए, नातेदारी के सांस्कृतिक विविधता के

अध्ययन में विवाह के नियम एक महत्वपूर्ण पहलू बन जाते हैं। इकाई के इस भाग में ऐसी विविधताओं का विवेचन किया गया है।

6.5.1 उत्तरः कबीले बहिर्विवाह, चार–कबीला नियम और अंतर्विवाह के नियम

उत्तर में किसी की जन्म वंश रेखा की स्पष्ट सीमाएं में वैवाहिक नियमों में परिलक्षित होती हैं। चार–पांच पीढ़ियों तक के वंश संबंधों के समूह को गोत्र (Gotra) के रूप में जाना जाता है। गोत्र एक उप–जाति के भीतर एक बहिर्विवाह इकाई है, जो उस विशेष उप–जाति के भीतर विवाह को विनियमित करने का मूल कार्य करता है। स्पष्ट शब्दों में कहें, एक ही गोत्र के दो व्यक्ति वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश नहीं कर सकते। इस नातेदारी व्यवस्था के आधार पर, कर्वे ने अपने मोनोग्राफ में, उत्तर में इस संबंध में संचालित होने वाले चार–कुलों के नियम का वर्णन किया। इस नियम के अनुसार, एक पुरुष को अपने पिता के गोत्र, अपनी माता के गोत्र, अपने पिता की माता के गोत्र और अपनी माता की माता के गोत्र की किसी स्त्री से विवाह करने की अनुमति नहीं है। कबीले बहिर्विवाह के नियमों द्वारा निर्धारित एक महत्वपूर्ण प्रतिबंध के रूप में, एक ही गांव के भीतर शादी करने पर एक और प्रतिबंध है। इसका कारण है – एक गाँव के भीतर, निवासियों के केवल कुछ वंश होते हैं, और वे एक–दूसरे के भाई–बहन माने जाते हैं।

दूसरी ओर, उत्तर में जाति एक अंतर्विवाही इकाई हैय कहने का तात्पर्य यह है कि केवल अपने ही जाति समूह की सीमा के भीतर ही विवाह की अनुमति है। लेकिन, फिर भी कुछ 'नकारात्मक' नियम हैं, यानी निषेध के नियम, जो इस तरह के गठबंधन का मार्गदर्शन करते हैं।

6.5.1.2 उल्टाव न करने का नियम

क्योंकि जाति एक अत्यधिक स्तरीकृत और पदानुक्रमित सामाजिक संरचना है, विभिन्न उप–जातियों की स्थिति, और उसके बाद, उनके भीतर की इकाइयों की स्थिति भिन्न होती है, और पदानुक्रम में बनी रहती है। यह नियम इसी व्यवस्था का परिणाम है। आइए, इसे उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के सरजुपारी ब्राह्मणों (Sarjupari Brahmins) के एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। सरजुपारी ब्राह्मणों की तीन उपजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक को आगे तीन घरों या वंश या परिजन समूहों में विभाजित किया गया है। इन समूहों को श्रेणीबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जाता है, और विवाह हमेशा निम्न से उच्च वंश में होते हैं। इसलिए, वर और वधू के बीच एक श्रेणीबद्ध संबंध है। मान लीजिए कि दो वंशों का नाम A और B है; जिसमें वंश A की एक महिला (जैसे W) का विवाह B वंश के एक पुरुष M से किया गया है। इसलिए, M को विवाह गठबंधन और समारोहों में उच्च अनुष्ठान का दर्जा प्राप्त होता है। यदि M की बेटी का विवाह वंश A के पुरुष से हो जाता है, तो M को वंश A के पुरुष को वही उच्च अनुष्ठान का दर्जा देना होगा। लेकिन, अनुलोम विवाह (Hypergamy) के नियम के अनुसार, वंश A, वंश B से कम है और इसलिए, यह विवाह भूमिकाओं को उलट देगा। उत्तर भारत में, इस तरह के उलटफेर की अनुमति (जैसे M) नहीं है, और इसलिए, पितृपक्ष अंतः–कज़न के साथ विवाह पर प्रतिबंध है।

6.5.1.3 दोहराव न करने का नियम

इस नियम का तात्पर्य है कि यदि किसी व्यक्ति की बहन किसी परिवार में पहले से ही विवाहित है, तो उसकी बेटी का विवाह उसी परिवार में नहीं किया जा सकता है। इसका मूल रूप से तात्पर्य यह है कि उत्तर भारत में मातृपक्ष

अंतः–कजिन के बीच भी विवाह प्रतिबंधित है। इस प्रकार, इस क्षेत्र में पितृपक्ष और साथ ही मातृपक्ष अंतः–कजिन में विवाह की अनुमति नहीं है।

6.5.1.4 मध्य क्षेत्रः अंतः–कज़न विवाह और अन्य विविधताएंः

मध्य भारत में अहिर (Ahir), काठी (Kathi), गरसिया (Garasia) और घड़व चरण (Ghadava Charan) जैसे जाति समूहों और ढेड (Dhed), भील (Bhil) और कोली (Koli) जैसे आदिवासी समूहों में पितृपक्ष और मातृपक्ष दोनों में अंतः–कजिन विवाह की अनुमति है। महाराष्ट्र में, प्रमुख मराठा और कुनबी इस संबंध में विवाह की अनुमति और निषेध दोनों प्रदर्शित करते हैं। कुछ लेविरैट (Levirate) को मानते हैं। इसी तरह, कुछ अंतः–कजिन विवाह को वर्जित मानते हैं; जबकि कुछ अन्य ऐसे विवाहों पर रोक नहीं लगाते हैं। मराठों के भीतर बहिर्विवाह के नियम कबीले के प्रतीक पर आधारित हैं, जिन्हें मराठी में 'देवका' (Devaka) के नाम से जाना जाता है। एक ही देवका वाले दो व्यक्तियों का विवाह नहीं हो सकता। एक 'देवका' के साथ, एक कबीले की स्थिति की पहचान की जाती है। सभी कबीले अनुलोम विवाहित (Hypergamous) इकाइयाँ हैं, जो समानांतर कजिन–विवाह, पितृपक्ष कजिन विवाह पर प्रतिबंध लगाते हैं; लेकिन मातृपक्ष अंतः–कजिन विवाह को प्राथमिकता देते हैं।

6.5.1.5 दक्षिण क्षेत्रः पसंदीदा वैवाहिक गठबंधन बनाम प्रतिबंध

दक्षिण में वैवाहिक नियमों को सकारात्मक नियमों के रूप में वर्णित किया गया है; यानी यह इस बात पर जोर दिया जाता है कि कौन किससे विवाह कर सकता है। इस संबंध में, विवाह तीन प्रकार के होते हैं। सबसे पहले, कई जातियों में, एक आदमी और उसकी बड़ी बहन की बेटी के बीच विवाह।

हालांकि, मातृवंशीय नायर इस तरह के गठबंधन की अनुमति नहीं देते हैं। दूसरा, कुछ जाति समूहों द्वारा अपने पिता की बहन की बेटी से विवाह को प्राथमिकता दी जाती है। हालांकि, ऐसे विवाहों में, मौजूद है, लौटाने की प्रवृत्तिय यानी अगर कोई आदमी किसी परिवार में बेटी से विवाह करता है, तो वह उम्मीद करता है कि वे बदले में उनकी बेटी से अपने परिवार के आदमी का विवाह करेंगे। तीसरा, एक अन्य प्रकार का पसंदीदा विवाह एक पुरुष और उसकी मां के भाई की बेटी के बीच होता है। कर्नाटक के हाविक ब्राह्मण (Havik Brahmins), आंध्र प्रदेश की कुछ रेड्डी (Reddy) जातियां और तमिलनाडु के कल्लर (Kallars) ऐसे अंतः–कजिन विवाह की अनुमति देते हैं। पिछली श्रेणी के विपरीत, यहां कोई लौटाने की प्रवृत्ति नहीं है; यानी अगर कोई आदमी किसी परिवार में बेटी से विवाह करता है, तो अपनी बेटी का विवाह उस परिवार में नही करता है।

बोध प्रश्न 4

1. उत्तर भारत में वैवाहिक नियमों को नियंत्रित करने वाले चार कुलों के नियम और अन्य आयाम क्या हैं?

____

____

____

____

2. मध्य भारत में विवाहों कि क्या विशेषता है?

____

____

____

____

3. दक्षिण भारतीय संस्कृति में विवाह अन्य संस्कृतियों से कैसे भिन्न हैं?

6.6 उपहारों का औपचारिक आदान–प्रदान

किसी भी नातेदारी संरचना के भीतर, एक व्यक्ति कई पदानुक्रमों में अपने स्थान के आधार पर, विभिन्न अवसरों पर उपहार देता है और प्राप्त करता है जैसे जीवन चक्र अनुष्ठानों के अवसरों पर। इस नातेदारी प्रथा को मानवशास्त्रियों द्वारा विभिन्न श्रेणियों के नातेदारों के व्यवहार के स्वरूपों के रूप में देखा गया है। लेकिन इस संबंध में उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों की सांस्कृतिक प्रथाओं में जबरदस्त अंतर है। आइए अब उन पर विचार करें।

6.6.1 उत्तर में उपहारों का एक–दिशा प्रवाहः

अपनी खुद की स्थिति को हीन मानते हुए, दुल्हन पक्ष के लोग दूल्हा पक्ष के सदस्यों को, किसी समारोह में, चाहे वह शादी हो या त्यौहार या जीवन चक्र अनुष्ठानों के अवसर, उपहार देते हैं। ऐसी व्यवस्था में उपहार देते रहना दुल्हन पक्ष के परिवार की स्थिति का सूचक माना जाता है। साथ ही, यह अपने ससुराल में दुल्हन के लिए सम्मान सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है। यह प्रक्रिया महिला के जीवित रहने तक चलती रहती है, और कुछ मामलों में उसके बाद भी। इसलिए, उदाहरण के लिएः जब एक महिला अपनी बेटी का विवाह करती है, तो वह खुद दूल्हा पक्ष के सदस्यों को उपहार देती है; लेकिन साथ ही, उसके माता–पिता का परिवार भी उन्हें उपहार देता है। उत्तर में उपहार देने की

इस परंपरा को जीवित रखने को एक दुल्हन के भाई की जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है, यहां तक कि उसकी मां और पिता से भी ज्यादा। यानि दुल्हन के अपने भाई और उसकी माँ के भाई की भूमिका उपहार देने वाले की हो जाती है।

6.6.2 दक्षिण में उपहारों का पारस्परिक आदान–प्रदान

यहां उपहार देने और लेने की प्रक्रिया के साथ विभिन्न श्रेणियों के नातेदारों के अलगाव या आत्मसात की पहचान की जाती है। दक्षिण में, उपहारों की दो श्रेणियां हैं – उपहारों का आदान–प्रदान विवाह से जुड़े हुए (Affines) के बीच किया जाता है; और, उपहारों का आंतरिक आदान–प्रदान भी होता है। पहली श्रेणी में क्रमशः वर और वधू के परिवारों के बीच उपहारों का आदान–प्रदान शामिल है। और, दूसरी श्रेणी में वे लोग शामिल हैं, जो विनिमय के दोनों पक्षों से संबंधित हैं – प्राप्तकर्ता और साथ ही देने वाले – और इसलिए, उन दोनों से उपहार प्राप्त करते हैं। कई लोगों ने इसे रिश्तों के विलय की प्रक्रिया कहा है। तमिलनाडु में, प्रमलाई कल्लर (Pramalai Kallar) उप–जाति में, दूल्हे के पिता द्वारा दुल्हन के पिता को दिए गए पैसे को 'परीसम' (Parisam)के रूप में जाना जाता है, जिसका उपयोग दुल्हन के पिता द्वारा दुल्हन के लिए आभूषण खरीदने के लिए किया जाता है। हालांकि, यह उम्मीद की जाती है कि दुल्हन के पिता दुल्हन के आभूषणों पर 'परीसम' के रूप में प्राप्त राशि का दोगुना खर्च करेगें। उपहारों का यह आदान–प्रदान विवाह के बाद कम से कम तीन साल तक जारी रहता है। एक समान आदान–प्रदान, जिसे 'वेरे पोना सर' (Vere pona Sir) (शाब्दिक रूप से, अलग होने का उपहार) के रूप में जाना जाता है, पहले बच्चे के जन्म पर या जब दंपति अपने अलग घर में जाते हैं दिया जाता है।

इस प्रकार, जब औपचारिक और जीवन–चक्र अनुष्ठानों के दौरान उपहारों के आदान–प्रदान की बात आती है, तो उत्तर और दक्षिण के बीच एक स्पष्ट सांस्कृतिक भिन्नता देखने को मिलती है। जबकि उत्तर में, उपहारों का प्रवाह दुल्हन पक्ष से दूल्हा पक्ष की ओर रहता है, दक्षिण में उपहारों का आदान–प्रदान होता है; भले ही दुल्हन पक्ष को दूल्हा पक्ष से प्राप्त उपहारों से दोगुना उपहार देने की आवश्यकता हो।

बोध प्रश्न 5

1. उत्तर भारतीय संस्कृतियों में औपचारिक उपहार कैसे दिए जाते हैं?

_____

_____

_____

_____

2. दक्षिण भारतीय संस्कृतियां औपचारिक उपहारों का आदान–प्रदान कैसे करती हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

6.7 सारांश

_____

नातेदारी प्रणाली को आकार देने वाले मानदंड, नियम और प्रतिरूप एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होते हैं। एक निश्चित आयाम है, जिस पर नातेदारी प्रणाली

में इन सांस्कृतिक विविधताओं का पता लगाया जा सकता है। भारत में समुदायों और क्षेत्रों को इन विविधताओं के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। भले ही, इकाई इस तरह के अंतः–सांस्कृतिक विविधताओं को इंगित करने का प्रयास करती है, लेकिन आधुनिकीकरण, शहरीकरण और प्रवास ने अधिकांश हिस्सों में कुछ परिवर्तन कर दिया है।

6.8 संदर्भ

Dube, Leela- (1974). Sociology of Kinship. Popular Prakashan: Bombay.

Dumont, Louis. (1966). Marriage in India: The Present State of the Question, Contributions to Indian Sociology, 9, pp. 90-114.

Karve, I. (1953). Kinship Organisation in India. Deccan College Monograph Series. Poona: Deccan College Post-Graduate and Research Institute.

Karve, I. (1994). The Kinship Map of India, in P. Uberoi (ed.), Family, Kinship and Marriage in India. Delhi: Oxford University Press, pp. 50-73.

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. वंश पैटर्न, नातेदारी शब्दावली, विवाह नियम और उपहारों का आदान–प्रदान।

बोध प्रश्न 2

1. आपको अपने उत्तर में सबसे पहले उत्तर भारतीय नातेदारी के पितृवंशीय आधार की व्याख्या करनी चाहिए। इसके बाद पूर्वी, संस्कृतियों में वंश के मातृवंशीय और पितृवंशीय दोनों पहलुओं की व्याख्या करनी चाहिए।

2. केरल के नायरों, कनारा के बंट् और बिलवास और केरल के नम्बूदरी ब्राह्मणों के उदाहरणों का उपयोग करते हुए, यह उजागर करने का प्रयास कीजिए कि कैसे दक्षिण भारतीय वंशावली पैटर्न भी मातृवंशीय और पितृवंशीय प्रवृत्तियों का मिश्रण हैं।

बोध प्रश्न 3

1. सबसे पहले, नातेदारी की वर्णनात्मक शब्दावली को परिभाषित कीजिए, फिर उदाहरणों के साथ उत्तरी संस्कृतियों में उनके उपयोग की पुष्टि कीजिए।

2. द्रविड़ नातेदारी को वर्गीकृत कहा जाता है, क्योंकि यह वक्ता की अपनी पीढ़ी को निम्नलिखित दो श्रेणियों में विभाजित करता है। एक समूह में सभी भाई–बहन होते हैं, जिनमें अपने समानांतर कजिन और पिता के समानांतर कजिन के बच्चे शामिल हैं। और, दूसरे समूह में क्रॉस–कजिन और करीबी रिश्तेदार जैसे कि ऊपर कहे भाई–बहनों की पत्नी पति शामिल हैं। यह व्यापक वर्गीकरण किसी की अपनी पीढ़ी में नातेदारों की पूरी श्रृंखला पर लागू होता है।

बोध प्रश्न 4

1. सबसे पहले उत्तर भारतीय विवाहों में प्रचलित चार–कुलों के नियम को परिभाषित कीजिए, फिर अन्य आयामों पर आगे व्याख्या कीजिए, जैसे कि कबीले बहिर्विवाह और जाति अंतर्विवाह में किससे विवाह प्रतिबंधित है।

2. इसमें आपको यह वर्णन करना होगा कि मध्य भारतीय संस्कृतियों में किस प्रकार के क्रॉस–कजिन विवाह की अनुमति है और क्या प्रतिबंधित है।

3. यह बताकर शुरू कीजिए कि दक्षिणी संस्कृतियों में विवाह उत्तर भारतीय और मध्य भारतीय दोनों संस्कृतियों का मिश्रण कैसे प्रस्तुत करते हैं।

बोध प्रश्न 5

1. उत्तर भारतीय संस्कृतियों में औपचारिक उपहार एक दिशा में प्रवाहित होते हैं। उदाहरणों का उपयोग करके इसे और विस्तारित कीजिए।

2. दक्षिण में, दुल्हन पक्ष और दूल्हा पक्ष के बीच औपचारिक उपहारों का आदान–प्रदान होता है, हालांकि एक प्रतिरोध के साथ, उदाहरणों का उपयोग करके उस पर विस्तार कीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 जाति, वर्ग और जेन्डर पहलू*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 जाति और नातेदारी

7.2.1 समानार्थी रूप में जाति और नातेदारी

7.2.2 अलग–अलग प्रणाली के रूप में जाति और नातेदारी

7.2.3 जाति–नातेदारी संबंधः केस अध्ययन

7.3 वर्ग और नातेदारी

7.3.1 वर्ग के पार नातेदारी

7.3.2 नातेदारी का आंतरिक पहलू

7.3.3 वर्ग–जेन्डर व नातेदारी

7.4 जेन्डर और नातेदारी

7.4.1 नातेदारी अध्ययन में जेंन्डर का विलोपन

7.4.2 नारीवादी योगदान

7.4.3 नातेदारी अध्ययन में नई दिशा

7.5 सारांश

7.6 संदर्भ

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

*योगदानः डॉ अर्चना प्रसाद, कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपः

- नातेदारी और जाति के अंतर–संबंध और आंतरिक पहलू की विवेचना कर सकेंगे;
- यह बता पाएंगे कि वर्ग नातेदारी प्रणालियों पर किस तरह प्रभाव डालता है;
- नातेदारी के जेन्डर पहलू को समझने में नारीवाद के योगदान पर ध्यान दे सकेंगे; और
- विभिन्न सामाजिक श्रेणियों और नातेदारी के आंतरिक पहलू को समझने के लिए भारत की क्षेत्रीय भिन्नताओं के कुछ उदाहरणों पर नज़र डाल सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम जाति वर्ग और जेन्डर (Gender–लिंग) के पहलुओं और नातेदारी से इनके आंतरिक पहलू के बारे में जानेंगे। इन पहलुओं में से प्रत्येक पहलू नातेदारी संबंधों पर प्रभाव डालता है, और इसलिए अंतः आंतरिक पहलू को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

नातेदारी के प्रारंभिक अध्ययनों का मुख्य केंद्र वंशिक (Genealogical) और वैवाहिक (Marital) योजकों का अनुरेखण करना था, जाति, वर्ग व जेंडर की जटिलताओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। सांस्कृतिक (Culture) दृष्टिकोण

के बाद ही, जाति, वर्ग और जेन्डर–आधारित विश्लेषण मानवशास्त्रीय (Anthropological) शोध का भाग बना। इस इकाई में, इन दोनों पहलुओं–विलोपन (Neglect) व समावेशन (Incorporation) का विवेचन किया गया है। हम जाति, वर्ग व जेन्डर के अंतरसंबंधों को समझने में भारत में क्षेत्रीय भिन्नताओं के उदाहरणों पर भी नजर डालेंगे। शुरू में, मानवशास्त्र (Anthropology) नातेदारी आधारित समूहों के बीच के जैविक योजकों (Ties) व गठबंधनो (Alliances) से हावी था। नातेदारी अध्ययन नातेदारी परिभाषा को समझने के लिए खून व विवाह से जुड़े सदस्यों का व्यवहार और भूमिका वंशिक योजकों के अनुरेखन तक ही सीमित था। यह तो उत्तर–श्नेडर (Post-Schneider) सांस्कृतिक दृष्टिकोण के बाद ही, जैसा हमने पहले भी कहा, नातेदारी संबंधों को जैविक व गठबंधनो के बाहर समझने और रचित करने पर ध्यान–केंद्रित हुआ।

नातेदारी के सांस्कृतिक दृष्टिकोण को नारीवादी मानवशास्त्रियों द्वारा आगे विकसित किया गया, जो नातेदारी अध्ययन में जेंडर की भूमिका को लेकर आए। कोलियर और यानागिसाको (Collier and Yanagisako) ने अपने कार्य जेन्डर ऐन्ड किनशिपः टूवडर्स अ यूनिफाइड एनालिसिस (Gender and Kinship : Towards a Unified Analysis) में इस धारणा को चुनौती दी कि जेन्डर व नातेदारी बारीकी से जुड़े होने की बजाय अलग है। उनके अनुसार, नातेदारी, लिंग व जेन्डर को एक सांतत्यक (Continuum) पर समझा जा सकता है। गेल रूबिन (Gayle Rubin, 1975) ने कहा कि नातेदारी प्रणाली सामाजिक रूप से संगठित लैंगिकता (Sexuality) के ठोस प्रकारों से बनी है। इसलिए, नातेदारी प्रणालियाँ लिंग/जेन्डर प्रणालियों की प्रत्यक्ष व आनुभाविक प्रकार हैं। नारीवादी मानवशास्त्रीयों ने एक ऐसा ढांचा तैयार किया, जो जेन्डर–आधारित शक्ति संबंधों और महिलाओं के उत्पीड़न को जाति और वर्ग प्रभुत्व की संरचनाओं में स्थित

करता है। इसलिए जेन्डर के साथ–साथ जाति और वर्ग के पहलू भी नातेदारी नेटवर्क और संबंधों को समझने के अभिन्न अंग बन गए। विद्वानों ने नारीवादियों से सहमति रखते हुए महिलाओं को वर्ग के रूप में अपनाया, ना कि शरीर (Bodies) के रूप में जिस पर पुरुषों का अधिकार हो (रैडक्लिफ ब्राउन–Radcliffe Brown का जैविक दृष्टिकोण), और जो समाज के एकीकरण की ओर काम करें (लेवी–स्ट्रॉस–Levi Strauss–गठबंधन दृष्टिकोण)। नातेदारी अध्ययन में जाति, वर्ग व जेन्डर पहलुओं को शामिल करना, वाद–विवादो को प्रकृति/जीव–विज्ञान और संस्कृति के द्विभाजन के पार ले जाता है। यह माना जाता है कि मानव सामाजिक व्यवहार की पूरकता (Complementarity) मानव समाज की विशिष्ट विशेषता है।

7.2 जाति और नातेदारी

जाति शब्द का उद्भव स्पैनिश (Spanish) शब्द 'कास्ता' (Casta) से हुआ, जिसका मतलब है 'नस्ल' (Breed), प्रजाति (Race) और 'प्रकार' (Kind)। जाति, विशेष रूप से, भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाली स्तरीकरण की एक प्रणाली है। यह एक विशेष समूह में पैदा होने के कारण क्षेयित (Ascribed) अवस्था पर आधारित है। यह मनुष्य को विभिन्न समूहों में श्रेणीगत करता है, और इन समूहों को अलग–अलग व्यवसाय में निर्दिष्ट करता है। इसलिए, जाति को भी व्यवसायिक विभाजन और पदानुक्रम के रूप में देखा जाता है, क्योंकि व्यवसायों को पदानुक्रम मे अलग–अलग महत्व और अवस्था मिलती है। एम. एन. श्रीनिवास (M. N. Srinivas) ने जाति को एक वंशानुगत अंतर्विवाही, आमतौर पर स्थानीकृत समूह के रूप में परिभाषित किया, जिसका एक व्यवसाय के साथ एक पारंपरिक संबंध है, और जातियों के स्थानीय पदानुक्रम में एक विशेष स्थान है।

7.2.1 समानार्थी रूप में जाति और नातेदारी

नातेदारी प्रणाली पर शुरू के अध्ययन, जाति और नातेदारी को समानार्थक मानते हुए, उन्हें अदला–बदली कर उपयोग करते थे। इरावती कर्वे (Irawati Karve, 1965) ने जाति और नातेदारी को अविभाज्य (Inseperable) माना। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जाति एक अंतर्विवाही इकाई है और किसी के भी अपनी जाति के बाहर कोई रिश्तेदार नहीं होते। इसी तरह लुई डयूमॉन्ट (Louis Dumont) ने दक्षिण भारतीय नातेदारी और विवाह के अपने अध्ययन में कहा कि जाति को नातेदारी से अलग नहीं किया जा सकता है।

कई क्षेत्रों में जाति और नातेदारी को अविभाज्य माना जाता था:

क) परिवार–नातेदारी प्रणाली जाति समूहों के परिवारों के भीतर संचालित होती है, जो एक गांव में या पास के गावों के समूह में रहते हैं;

ख) विवाह–जातियों का अंतर्विवाही (Endogamous) होना, यानी एक व्यक्ति अपनी जाति के भीतर विवाह करता है, इसका मतलब एक ही जाति के व्यक्ति नातेदार हैं, क्योंकि वे पहले से ही संबंधित हैं, या संभावित रूप से एक दूसरे से संबंधित हो सकते हैं; और

ग) प्रतिष्ठा और सम्मान (Status and Honour)–जाति–साथी आमतौर पर एक दूसरे की मदद करने के लिए आगे आते हैं, जब दूसरे लोग उनके सम्मान और प्रतिष्ठा को चुनौती देते हैं। वे एक साथ धार्मिक रिवाज़ (Rituals) भी कर सकते हैं, और आर्थिक तौर पर एक–दूसरे की मदद भी कर सकते हैं

उप–खंड में भी नातेदारी और जाति को अंतर्संबंध देखा जा सकता है। जाति का सबसे बड़ा भाग (Segment) उप–जाति है, और यह जाति के लगभग सभी कार्य संपन्न करता है, जैसे अंतर्विवाह और सामाजिक नियंत्रण। इस प्रकार उप–जाति की आंतरिक संरचना वह ढांचा प्रदान करती है, जिसके भीतर नातेदारी प्रणाली का संचालन होता है। एक उप–जाति के सदस्य नातेदारों सदस्यों के रूप में सहयोग करते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपना उत्तर मिलाइए।

1. जाति प्रणाली से आप क्या समझते हैं ?

_____

_____

_____

_____

2. जाति और नातेदारी पर इरावती कर्वे के विचार लिखिए।

_____

_____

_____

_____

7.2.2 अलग–अलग प्रणाली के रूप में जाति और नातेदारी

कैथलीन गो (Kathleen Gough, 1959) ने जाति और नातेदारी के बीच अंतर करने का प्रयास किया। तमिलनाडु के तंजौर (Tanjore) जिले के कुम्बाबेट्टई

(Kumbabettai) गांव के अपने अध्ययन में, उन्होंने ब्राह्मणों और आदि–द्रविडो के बीच पारिवारिक और नातेदारी संबंधों और मूल्यों के अंतर और असमानताओं को दिखाने का प्रयास किया। ब्राह्मण शिक्षा और रोजगार के लिए दूसरे शहरों में पलायन कर गए और निचली जाति के लोग आस–पास के क्षेत्रों से कुम्बाबेटृई में पलायन कर गए, और इस सब का परिणाम यह हुआ कि गांव व्यापक अर्थव्यवस्था के संपर्क में आ गया।

मेयर फोर्टेस (Mayer Fortes, 1959) स्पष्ट रूप से जाति और नातेदारी को अलग करते हुए तर्क दिया कि जाति बाहरी संबंध को संदर्भित करती है, जबकि नातेदारी घरेलू या आंतरिक संबंध को संदर्भित करती है। फोर्टेस के विभेदन को लागू करते हुए एंड्रियन मेयर (Adrian Mayer) ने मध्य–भारत में जाति और नातेदारी के अपने अध्ययन में तर्क दिया कि जाति आंतरिक संरचना से संदर्भित है, जोकि गांव के भीतर के संबंध हैं, जबकि नातेदारी गांव के बाहर के संबंधों को संदर्भित करती है। जाति के स्तर पर नातेदारी को अंतर्वैयक्तिक संबंधों (Interpersonal Relations) के रूप में देखा जाता है। इसलिए गांव के भीतर के सदस्यों को पितृवादी (Agnates) या रक्त के माध्यम से संदर्भित किया जाता है, और गांव के बाहर के सदस्यों को युटिराइन या अफिनल (Uterine or Affinal) या विवाह से जुड़ा कहा जाता है। इन दो प्रकार के रिश्तेदारों में भेद विवाह के नियमों में दिखाई देता है, जहां जाति के सदस्यों को अपने गांव के बाहर विवाह करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि गांव के सभी सदस्य खून के रिश्तेदार होते हैं।

लीच (Leach, 1951) ने भी जाति और नातेदारी को विभेदित किया। जाति, लीच के अनुसार, राजनीतिक न्यायिक (Politico-jural) अधिकार–क्षेत्र (Domain) है,

और नातेदारी घरेलू अधिकार–क्षेत्र है। उदाहरण के तौर पर, पश्चिम बंगाल के जयानगर के डुले बगड़ी (Dule Bagdis) ने दोनों श्रेणियों को विशिष्ट रूप से विभाजित किया है–जाति–साथी (दलस्थ–Dalastha) और नातेदार (देजी–Deiji)। जाति–साथियों के पास बाहरी प्रतिष्ठा (Status) है, और नातेदारों के पास आंतरिक प्रतिष्ठा है।

7.2.3 जाति–नातेदारी संबंधः केस अध्ययन

गिरसिया (Giriasias–आमतौर पर जिसे जनजाति के रूप में माना जाता है), राजपूतों (जो एक जाति हैं) के पड़ोस में राजस्थान में रहते हैं; गिरासिया अपने आप को राजपूत जाति की शाखा होने का दावा करते हैं। कई मुद्दों में जब समूह खुद को श्रेणीबद्व या वर्गीकृत करते है, वह दूसरे समूहो द्वारा किए गए वर्गीकरण से मेल नहीं खाता। व्यवहार में गिरसिया कई सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक संस्थानों को क्षेत्र की दूसरी 'जाति' समुदायों और जनजाति 'भीलो' के साथ सांझा करते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि ये समूह अविभेद्य (Indistinguishable) है, लेकिन,'राजपूत' और 'भील' (Bhils) रूढ़ीवादी धारणाएओं का प्रयोग गिरसिया समूह के भीतर मतभेद की पहचान और मूल्यांकन को व्यक्त करने के लिए किया गया था। हालांकि, भारत में मानवशासत्रियों और समाजशास्त्रियों के बीच जनजाति/जाति विभेदन और उसी तरह दोनों में श्रम के विभाजन पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। गिरसिया के लिए पितृवंशीय (Patrilineal) नातेदारी और क्षेत्र उनकी 'जाति' पहचान की भावना में एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। यह अन्य समुदायों के विपरीत ('राजपूत' और भील को छोड़कर) है, जिनके लिए जाति में अधिक बिखराव है, व वह एक पितृवादी (Agnatic) व विवाह से जुड़ा समूह है। वंश (Descent) महत्वपूर्ण है। यद्यपि

उनकी नातेदारी विचारधारा पदानुक्रम की बजाय अलगाव की भावना पर जोर देती है। गिरसिया नातेदारी विभेदन सदस्यों का असमान रहने के समान अवसर प्रदान करते हैं।

वंशागत (Lineal) नातेदारी संबंधों पर बातचीत के लिए, चाहे वे जैविक योजकों पर आधारित हो या नहीं, एक प्रतिमान प्रदान करती है। इसके साथ ही, भिन्नता (Difference) की रचना के लिए जेंडर एक बोल–चाल शैली प्रदान करता है। वंश समूह को अलग–अलग रूप में उनके मूल्यांकन द्वारा देखा जाता है, जो इस पर निर्भर करता है कि वे किन समूहो से अपनी पत्नियों को लेते हैं। अपने बीच अंतर करने के लिए गिरसिया और बाहरी सदस्य, महिलाओं के पहनावे व व्यवहार, और कथित जेन्डर भूमिकायों का प्रयोग करते हैं।

गिरसिया नातेदारी व जेन्डर संबंधों की स्थानीय जटिलता के बावजूद, जिसे जाति और जनजाति की भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, बाहरी लोग (अन्य जातियाँ, वर्ग, सरकारी अधिकारी, शिक्षक) स्थानीय, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर की जाति और जेंडर की राजनीति के परिणामस्वरूप, गिरसिया को हमेशा आदिवासी मानते हैं। (उन्नीथन–Unnithan, 1993)। एक और उदाहरण है उत्तर प्रदेश के मिरजापुर जिले के सर्जुपरी (Sarjupari) ब्राह्मणों का, इसे लुई डयूमोन्ट (Louis Dumont, 1966:107) ने अध्ययन किया। इस क्षेत्र के सर्जुपुरी ब्राह्मणों की तीन उप–जातियों को तीन घरों (नातेदारी समूह या वंशवली) में विभाजित किया गया है, जो प्रतिष्ठा के अनुसार, पदानुक्रर्मित हैं। विवाह हमेशा निम्न से उच्च घर में व्यवस्थित होते हैं। इसका अर्थ है कि महिलाओं को हमेशा उस परिवार में दिया जाता है, जो उनके घर से ऊंचा (प्रतिष्ठ) हो। यह स्पष्ट रूप से यह

दिखाता है कि उत्तर भारत में, ब्राह्मणों व उच्च जातियों में विवाह के नियम, वधू–देने वालों और वधु–लेने वालों बीच पदानुक्रमिक संबंध बनाए हुए हैं।

7.3 वर्ग और नातेदारी

वर्ग समाज के एक प्रतिष्ठा समूह को संदर्भित करता है। यहां प्रतिष्ठा से हमारा मतलब आर्थिक समृद्धि से है। इसलिए, वर्ग का अर्थ है एक व्यक्ति की समाज में आर्थिक स्थिति। मार्क्स ने वर्ग को उत्पादन के संसाधनों पर नियंत्रण रखने वाले सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया। मार्क्स के अनुसार, समाज में दो वर्ग–पूंजीवादी या बुर्जआ (Capitalist or Bourgeois) वर्ग (जिनके पास उत्पादन के साधन है) और श्रमजीवी वर्ग (Proletariat) (जिनके पास उत्पादन के साधन या श्रमिक वर्ग नहीं है) शामिल हैं। मैक्स वेबर के अनुसार, वर्ग केवल समाज में अर्थिक संबंधों का उत्पाद नहीं है, ऐसे अन्य कारक भी है, जो वर्ग को प्रभावित करते हैं, जैसे समाज में 'प्रतिष्ठा' (सामाजिक सम्मान या गौरव में सामाजिक समूहों के बीच अंतर) और 'पार्टी' (व्यक्तियों का एक समूह, जो इस तथ्य के कारण एक–साथ काम करें कि समाज में उनकी समान हालत, लक्ष्य या हित हैं)। वर्ग–आधारित समाजों में नातेदारी सामाजिक गतिशीलता को समझने के लिए उपयोगी है। नातेदारी प्रणाली में असमानता की समझ को वर्ग अधिक व्यापक बनाता है। आर्थिक पहलू के विश्लेषण ने वर्ग पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हुए, नातेदारी अध्ययन को पुनर्जीवित किया है। इसने संसाधनों, सामाजिक संगठन और अंतर–व्यक्तिगत संबंधों के बीच अंतर–संबंधों के विश्लेषण को अधिक गहन किया है।

7.3.1 वर्ग के पार नातेदारी

श्नेडर के अनुसार, सभी वर्गों की समान नातेदारी प्रणाली होती है। अपने अमेरिकी नातेदारी प्रणाली के अध्ययन में, उन्होंने मध्यम वर्ग का अध्ययन किया और यह सोच लिया कि निम्न वर्ग भी ऐसा ही है। हालांकि कैरोल स्टैक (Carol Stack) ने अपने अश्वेत या ब्लैक (Black) अमेरिकियों के अध्ययन में यह तर्क दिया कि निम्न वर्ग मध्य और उच्च वर्गों से भिन्न होता है। निम्न वर्ग में, रिश्तेदार सामान (Goods) साझा करने के साथ–साथ देखभाल और भावनाओं के लिए एक सहायता समूह (Support Group) बनाते हैं। जो जैविक रिश्तेदार इस नेटवर्क में शामिल नहीं होना चाहते, उनका बहिष्कार कर दिया जाता है। यहां वर्ग कारक नातेदारी संबंधों को निर्धारित करते हैं।

7.3.2 नातेदारी का आंतरिक पहलू

जनजाति समाज और मुखिया–प्रथा (Chiefdom) पर किए गए अध्ययन अक्सर इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे नातेदारी संरचनाएं और घरेलू कार्य–क्षेत्र राज्य की नीतियों व्यापार और उपनिवेशवाद से प्रभावित हैं। रियटर (Reiter) ने ग्रामीण फ्रांस लोक–निजी कार्यक्षेत्रों में जो उत्तीर्ण कार्य किया वह यह दर्शाता है कि कैसे राज्य नीतियां ने निजी–लोक द्विभाजन का समर्थन करती है, खास–तौर पर श्रम विभाजन के संदर्भ में। महिलाओं को नातेदारी नेटवर्क के सेवन व प्रजनन के कार्य सोंपे जाते हैं। राज्य को ज्यादातर, जो औद्योगिक पूंजीवाद पर आधारित है, करो और श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है, इसलिए अधिक व्यक्तियों की जरूरत होती है। दूसरी तरफ, मनुष्य आविष्कार और निर्माण के लिए जिम्मेदार है।

वर्ग–नातेदारी अंतः क्रिया (Interaction) पर एक अन्य अध्ययन नारीवादी विद्वान आइरीन सिल्वरब्लैट (Irene Silverblatt) का कार्य है। अपने शोध में वह 1988 में इन्का राज्य (Inca State) के सदृढीकरण के संदर्भ में, वर्ग गठन की प्रक्रिया का खुलासा करती है। उनका तर्क है कि नए राष्ट्र राज्यों के गठन के कारण जेंडर संबंधों का पुनर्लेखन हुआ है। इन्का के केस में पराजित समूहों को महिलाओं तक पहुंच यह दर्शाती थी कि समूह अब विजेताओं के अधीन है। नौकरशाही संगठनों के गठन ने (जो राष्ट्र राज्य के कार्य–पद्धति के लिए जरूरी है) जेन्डर संबंधों में भी बदलाव लाया। श्रम के लैंगिक विभाजन का स्थान लैंगिक पदानुक्रम ने ले लिया, जिससे राज्य के पुरुषों को योद्धा से राज्य प्रशासकों के रूप में बढ़ावा दिया गया। नौकरशाही संगठन में महिलाओं को सभी स्थानों से वंचित कर दिया गया और भूमि व संपत्ति के उनके अधिकारों से उन्हें अलग कर दिया गया। इस प्रकार राज्य के सदृढीकरण ने केवल पुरुषों को भौतिक लाभ प्रदान किए, और महिलाओं को पुरुषों पर आर्थिक रूप से आर्शित कर दिया। अपने अध्ययन में सिल्वरब्लेट (Silverblatt) ने राज्य और जेन्डर संबंधों का विवेचन चार पहलुओं से किया है। संसाधनों पर नियंत्रण, लैंगिकता पर नियंत्रण, प्रतिस्पर्धी पदानुक्रमों में हेरफेर, और जेन्डर और शक्ति का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व।

इसी तरह, वॉट्सन (Watson:131) ने दर्शाया कि शक्तिशाली स्थानीयकृत पितृवंश (त्सू–Tsu) का विकास किसी भी तरह से पितवंशीय व्यवस्था का एक अनिवार्य परिणाम नहीं था, लेकिन इसका उद्भव उच्च स्तर के राजनीतिक केंद्रीकरण और आर्थिक असमानता के बीच हुआ, जहां ''एक छोटे–छोटा भूमि धारक व्यापारी वर्ग एक अधिक बड़े लघु–धारक किराएदार वर्ग पर हावी हो गया था'' (125:284)। यह उत्पादन का एक वंशावली तरीका नहीं था, लेकिन उत्पादन के सामाजिक

संबंधों को एक नातेदारी शैली में व्यक्त किया गया था, जो भाइयों (सदस्यों) के बीच एकता और समानता पर जोर देता था, जिससे वर्ग (और जेंडर) असमानताओं को पुनः उत्पन्न करने में मदद मिली।

7.3.3 वर्ग जेन्डर व नातेदारी

फ्रेडरिक एंगल (Friedrick Engle) का कार्य 'परिवार का उद्भव, निजी संपत्ति, और राज्य' (Origin of Family, Private Property and State) यह समझने में मदद करता है कि नातेदारी और वर्ग–आधारित उत्पादन के सामाजिक संबंध जेंडर भूमिका और प्रतिष्ठा को प्रभावित करते हैं। एंगेल्स ने जेन्डर असमानता का भौतिक सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस ढांचे के अंदर, उन्होंने महिलाओं की स्थिति को समाज की मौजूदा आर्थिक और राजनीतिक स्थितियां के अनुसार, भिन्न–भिन्न स्थान और समय के रूप में देखा। उनका तर्क था कि महिलाओं की स्थिति हमेशा से अधीनस्थ नहीं रही है, जैसी आज है। यहां पर संदर्भ पूंजीवाद के हर जगह विकास से है और उन तरीकों से है, जिनसे पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की स्थिति प्रभावित हुई है। वह उन तरीकों का पता लगाते हैं, जिसमें निजी संपत्ति के उद्भव ने पुरुषों और महिलाओं के बीच महिलाओं और काम के बीच संबंधों मे बदलाव हुआ है और ज्यादातर, संपत्ति के वर्ग और समाज से संबंधों की ओर।

वनीसा मेहर (Vanessa Maher, 1987) वर्ग आधारित समाज की असमानताओं के बीच पुरुषों और महिलाओं के आपस के संबंधों की जांच करती है। दो युद्धो के बीच के काल के टयूरिन (Turin) के उच्च फैशन उद्योग के श्रमजीवी वर्ग के दर्जियों (Seamstresses) के उनके अध्ययन ने यह बताया कि बुर्जआ और

श्रमजीवी वर्ग के बदलते हुए संबंधो ने घरेलु व सार्वजनिक क्षेत्रों की वैचारिक परिभाषा मे कितनी अस्पष्टता पैदा कर दी थी, जो दर्जी लांघ सकते थे। अपने उद्योगों को घरेलू करार करके उद्योगपतियों के श्रम कानूनों से बचने के लिए किए गए प्रयत्नों के कारण जवान महिलाओं को माता–पिता के निगरानी से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। साथ ही, सिलाई के ज्ञान ने दर्जियो को यह समझाया कि अमीर महिलाए कैसे तैयार होती है, जिससे, वर्ग के पार, अपने पुरुष विश्वविद्यालय सहपाठियों के साथ इश्कबाजी की इजाजत मिल पाई। ऐसे ही, विवाहित सिलाई करने वाली दर्जी अपने घर में अपने पतियों की यह इच्छा कि वे घर मे रहे पूरा कर सकती थी; साथ ही, बुर्जुआ ग्राहकों की सेवा के लिए उनके परिवार के घर का उपयोग उनके श्रमिक वर्ग के पति की निजता (Privacy), आराम और पत्नी की सेवाओं पर एकाधिकार की इच्छा का उल्लंघन करता था।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपना उत्तर मिलाइए।

1. क्या आपको लगता है कि नातेदारी व्यवस्था वर्ग के अनुसार बदलती रहती है? उचित कारणों के साथ उत्तर दीजिए।

———————————————————————————————

———————————————————————————————

———————————————————————————————

———————————————————————————————

2. नातेदारी को समझने में जाति, वर्ग और जेन्डर के बीच अंतर–संबंध की विवेचना कीजिए।

_____

_____

_____

_____

_____

7.4 जेंडर और नातेदारी

_____

जेंडर संबंध अलग–अलग और बदलते नातेदारी संबंधों में अंतर्निहित है। नातेदारी की जटिलता वर्ग, वंश, संस्कृति और राष्ट्र पर आधारित महिलाओं की स्थिति के सामान्यकरण को चुनौती देती है। संस्कृति और समाज में महिलाओं को विभिन्न पद प्रदान करके नातेदारी जेंडर संबंधों को संदर्भित करती है। हालांकि, 1970 के दशक से पूर्व, नातेदारी अध्ययन ने जैविक और वैवाहिक संबंधों को समझने में जेंडर पहलू पर ध्यान नहीं दिया। केवल नारीवादी मानवशास्त्रियों के अध्ययनों के बाद ही नातेदारी संबंधों को समझने के लिए जेंडर के महत्व को पहचान मिली। महिलाओं की स्थिति व परिवर्तन की संभावनाओं को समझने के लिए मानवशास्त्रियों ने जेन्डर पहलू का प्रयोग किया।

7.4.1 नातेदारी अध्ययन में जेंडर का विलोपन

मानवशास्त्रियों द्वारा किए गए प्रारंभिक अध्ययन में नातेदारी शब्दावली और व्यवहार को समझने में महिलाओं पर ध्यान नहीं दिया गया। एक विश्लेषणात्मक श्रेणी के रूप में जेंडर मौजूद नहीं था, क्योंकि यह माना जाता था कि पुरुषों के अध्ययन में ही महिलाएं भी शामिल थी। महिलाओं की अदृष्यता का एक कारण अनुसंधान पद्धति या क्षेत्रीय शोध में निहित था, जिसमें शोधकर्ताओं ने केवल

पुरुषों की बात की। महिलाएं केवल परिवार व विवाह से जुड़े मुद्दों पर प्रतिवादी के रूप में दिख सकती हैं, क्योंकि यह माना जाता है कि ये उनके अभिन्न अंग है।

7.4.2 नारीवादी योगदान

1990s के बाद, नातेदारी अध्ययन को नई दिशा मिली, क्योंकि अधिक केंद्रण जेंडर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीको आदि के अध्ययन पर दिया जाने लगा। रेयटर (Reiter) के कार्यों में, जैसे 'महिलाओं के मानवशास्त्र की ओर' (Towards Anthropology of Women) रोडाल्डो और लेमफेयर (Rodaldo and Lamphere, 1974) के कार्य 'महिलाएं, संस्कृति और समाज' (Women, Culture and Society) ने नातेदारी को समझने में शक्ति संबंधों की गतिशीलता को शामिल किया। यह तर्क दिया गया कि केवल खून के रिश्ते और विवाहित समाज के सदस्यों को समझना ही काफी नहीं, शक्ति (Power) संबंध भी बहुत आवश्यक है। लिंडा स्टोन (Linda Stone) ने कहा कि नातेदारी संबंधों को गतिशीलता शक्ति संबंधों और मोल–भाव (Negotiation) संबंधों के रूप में देखा जाना चाहिए, ना कि वंश और गठबंधन की अमूर्त (Abstract) प्रणाली के रूप में। नातेदारी को धीरे–धीरे अधिकारों और कर्तव्यों के अलावा शक्ति (सत्ता), अधीनता और समाज में सत्ता या शक्ति हासिल करने की कार्यनीतियों के संदर्भ में समझा जाने लगा। पितृवंषीय व्यवस्था पर कोलियर (Collier) के कार्य ने महिलाओं को कार्यनीतियों के रूप में महत्व दिया, और यह तर्क दिया कि पत्नियॉ अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए पितृस्थानीय (Patrilocal) घरेलू समूह के साथ जुड़ी हुई है, क्योंकि वे अपने बेटों और पतियों के माध्यम से खुद को घरेलूता के बंधन से मुक्त करने के लिए काम करती है।

फ्रेडरिक एंगेल (Fredrich Engel) ने अपने कार्य 'फैमिली का उद्भव निजी संपत्ति और राज्य' (The Origin of the Family, Private Property and the State, 1884) में पितृवाद के उद्भव और महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति का कारण निजी संपत्ति के उदय को बताया है। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं का उत्पीड़न समाज के वर्गों के विभाजन और राष्ट के उदय से हुआ। ऐंगल के अनुसार, पूर्व–पूंजीवादी समाज समतावादी थे और आर्थिक परिस्थितियों में विकास ने जेंडर असमानता को जन्म दिया। ऐंगल के सिद्धांत की आलोचना में, केरन सॉक्स (Karen Sacks) का तर्क है कि महिलाओं की स्थिति के पतन का कारण है शासक वर्ग के पुरुषों द्वारा साझा किए लाभ, जो तब भी थे जब आदिम साम्मवाद (Primitive Communism) का चलन था। वस्तुओं और मूल्यों के निर्माताओं का चयन शासक वर्ग से ही होता है और पुरुषों को लाभ होता है, क्योंकि वे घरेलू कार्यो से मुक्त होते हैं। महिलाओं के घरेलू कार्यो और पुरुषों के कार्यों में जो विभाजन है, वह ऐसी स्थितियां रचित करता है कि महिलाएं पूर्ण व्यस्क सदस्य की तरह विकसित नहीं हो पाती और पुरुषों पर निर्भर होने लगती हैं। नारीवादियों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका व स्थिति से जुड़ी धारणाओं को चुनौती दी। एनिट वेनर (Annette Weiner) के कार्य मूल्यवान महिलाएं और प्रतिष्ठावादी पुरुष' (Women of Value, Men of Renown, 1976) ने मेलिनोवस्की (Malinowski) द्वारा महिलाओं के आदान–प्रदान नेटवर्क (Exchange Network) की उपेक्षा का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया।

नातेदारी सिद्धांत में नारीवादी मानवशास्त्रियों का कार्य कुछ ऐसे द्विभाजनो को अस्वीकार करना था, जिनके उपयोग महिलाओं और उनकी स्थिति को अदृश्य कर दिया। सबसे महत्वपूर्ण द्विभाजन, जिसको अस्वीकारा गया वह था

निजी–सार्वजनिक द्विभाजन। इस तरह दो क्षेत्रों के बीच का यह द्वंद्व बहुत टिकाऊ रहा है। यह वंश सिद्वांत गठबंधन सिध्दांत और विवाह लेन–देन में मौजूद है। उदाहरण के तौर पर, वंश सिध्दांत एक अपवित्र्तनीय मां–बच्चे के बंधन की धारणा पर टिका हुआ है। यह मानता है की यह संबंध एक सर्वभौमिक संबंध है, जो हर समाज में मौजूद है, चाहे वह मातृवंशीय हो या पितृवंशीय हो। नैतिक, भावनात्मक विश्वासो पर आधारित मां और बच्चे का बंघन घरेलू इकाई का भाग है और वंश की परंपरा राजनीतिक–न्यायिक क्षेत्र का एक भाग है। इस द्विभाजन को जेंडर सबधों को समझने के लिए किया गया था, यह मानते हुए की घरेलू क्षेत्र लैंगिकता और बच्चों के पालन–पोषण को समार्पित था, जो मुख्य रूप मे महिलाओं से जुड़ा था, और सार्वजनिक क्षेत्र कानूनी नियमों और वैद्य अधिकारों को समर्पित था, जो मुख्य तौर पर पुरुषों से संबंधित थे।

महिलाओं और पुरुषों के बीच के आदान–प्रदान से संबंधित गठबंधन सिध्दांत, जो समाजिक समूह के बीच संबंधों की संरचना करता है, और घरेलू व सार्वजनिक क्षेत्रो के बीच अदान–प्रदान की भी बात करता है। लेवी स्ट्रॉस (Levi-Strauss), उदाहरण के तौर पर, वैवाहिक आदान–प्रदान के रूप के बारे में लिखते हैं, पर उनके तत्व (Content) के बारे में नहीं, क्योंकि उनके अनुसार, महिलाएं लैंगिक और घरेलू सेवाएँ प्रदान करती है, और उनके पास बच्चे पैदा करने का समान व अंतर्निहित मूल्य है, व पुरुषों के पास महिलाओं के आदान प्रदान (Exchange) का का वैध अधिकार है। पुरुषों और महिलाओं के व्यक्तित्व, कार्य और सामाजिक क्षेत्र को ऐसे ही स्वीकार करके जैसे वे दिखते हैं, और केवल उनके संरचनात्मक व्यवस्था यानी पदानुक्रम में भिन्नता देखते हुए (पत्नी–लेने वाले पत्नी–देने वालों से बेहतर हैं) लेवी स्ट्रॉस जेन्डर वर्गीकरण और संरचनात्मक व्यवस्था के गठन की द्वंद्वात्मक जांच करने में विफल रहे।

मानवशास्त्रीय साहित्य में, नातेदारी केवल घरेलु क्षेत्र तक ही सीमित थी, और अपने प्रजनन के प्राथमिक कार्य, व एकाकी (Nuclear) परिवार के गठन से ही संबंधित थी। हालांकि, प्रजनन कार्यो की धारणा को परिवार के मूल के रूप में स्वीकार कर, ऐसा दृष्टिकोण यह समझने में विफल रहता है कि आधुनिक समाज वंश–समाजों में वंश को कैसे समझ सकता है। यह समझ यह देखने में असफल है कि परिवार जेन्डर असमानता को किस प्रकार बार–बार उत्पन्न करता है, और साथ ही बच्चों का पोषण भी करता है। महिलाओं को घरेलू क्षेत्र और पुरूषों को सार्वजनिक क्षेत्र से जोड़ने वाली सामान्य धारणा को नारीवादी मानवशास्त्रीयों ने चुनौती दी। मेयर फोर्ट्स (Mayer Fortes) ने राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र से नातेदारी के बीच अंतर करने के लिए घरेलू और राजनीतिक–न्यायिक द्विभाजन का उपयोग किया। उन्होंने नातेदारी के जैविक आधार की पश्चिमी धारणा को चुनौती देते हुए, एक राजनीतिक–न्यायिक आयाम का विकास किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नातेदारी का एक न्यायिक, राजनीतिक पहलू भी है। हालांकि कानूनी नियमों के आधार पर नातेदारी के न्यायिक क्षेत्र को विकसित करने में, फोर्ट्स ने मां–शिशु बंधन के भावनात्मक संबंधों और नैतिक प्रतिबंधों पर निर्मित घरेलू क्षेत्र की धारणा को अनछुआ ही रहने दिया।

मर्लिन स्ट्रैथरन (Marilyn Strathern, 1995) ने व्यक्तितत्व, जेन्डर और वंश के बीच संबंधों के महत्व को नातेदारी चर्चा का विषय बनाया। उन्होंने अपना शोध–कार्य पपुआ न्यू गिनी, मेलनेशिया (Papua New Guinea, Melanesia) में किया था। उनका उद्देश्य व्यक्तित्व की अंतर्निहित अवधारणाओं की संरचना और नातेदारी की संकल्पनाओं से इनके संबंधों की जाच¡ करना था। माउंट हेगन (न्यू गिनी का पश्चिमी हाइलैड्स-Mount Hagen-Western Highlands Province of New

Guinea) के लोगों के बीच नातेदारी लोगों से अलग भी हो सकती है, जो और लोगों और चीजें से जुड़ी होने की आदर्श स्थिति प्रदान करती है। महिलाएं, उदाहरण के तौर पर, अपने कुल से अलग हो सकती हैं और पति के कुल से जुड़ सकती हैं, जैसे वस्तुओं को अपने निर्माताओं से अलग किया जा सकता है और वस्तु पाने वालों की संपत्ति में जोड़ा जा सकता है। ये विसंबंधन के विचार ऐसे आधार उत्पन्न करते हैं, जो पत्नियों, धन की वस्तुओं और प्रतिष्ठा के संचयन के अवसर देते हैं, जिससे बड़े पुरुष बन सके। दूसरी ओर, वीरू 'Wiru' (पपुआ न्यू गिनी के दक्षिण उन्नत भूमि के एक ज़िला में), महिलाएं अपने गांव के रिश्तेदारों से अलग नहीं होती, बल्कि उनके विवाह, संबंधियों (Affine) मे संबंध स्थापित करते हैं। इसलिए, हम देख सकते हैं कि वीरू और माउंट हेगल के समाजों में अलग प्रकार की संस्कृति और राजनीतिक गतिशीलता है, जो इन समाजों को बनाती है, जो पितृवंशीय विचारधारा को सांझा करते हैं। इसी तरह, मानवशास्त्री शपिरो (Shapiro) दर्शाते हैं कि कैसे, अमरिका में पितृवंशीय वंश का उद्भव वंशावली संबंधों से न जुड़कर, पुरूषत्व (Masculinity) की सांस्कृतिक रचना से जुड़ा है, जिसका मतलब है कि राजनीतिक और धार्मिक संगठनों के लिए पितृपक्षीय (Agnatic) योजकों का प्रयोग होता है।

अभी तक की चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि नारीवादियों ने निजी और सार्वजनिक के द्विभाजन को पुनः परिभाषित किया। उन्होंने तर्क दिया कि यह महत्वपूर्ण है कि हम द्विभाजन पर ध्यान देने की बजाय, नातेदारी के अध्ययन पर सवाल उठाए व जेन्डर और नातेदारी को एकीकृत इकाई के रूप में समझे। नारीवादियों ने प्रजनन के घरेलू क्षेत्र होने की धारणा पर सवाल उठाए। सरोगेसी (Surrogacy), आई वी एफ (-IVF-In-Vitro Fertilisation) के आगमन से प्रजनन

घरेलू क्षेत्र के बाहर ले जाया जा सकता है। इस प्रकार नातेदारी व जेन्डर न केवल जैविक रूप से बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी रचित होते हैं।

7.4.3 नातेदारी अध्ययन में नई दिशा

1990 के पश्चात, नातेदारी अध्ययन में नई दिशा आई है, क्योंकि ध्यान का केंद्र अब अधिक जेन्डर, व्यक्तित्व समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों का अध्ययन हो गया है। अब अधिक जोर इस बात पर दिया जा रहा है शक्ति और अधीनता के विभिन्न पहलुओं के रोजमर्रा के अनुभवों और प्रतिनिधित्व को दर्शाया जा सके। अंतर्विरोधों, विरोधाभासों और द्वैतवाद (Contradictions, Paradoxes and Ambivalence) के विषयों पर भी ध्यान देने का प्रयास हो रहा है। कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें नातेदारी अध्ययन ने ध्यान देना शुरू किया है; यह है:

i) प्रासंगिक धारणाओं का पुनः परीक्षण

के. सारदामणि (K. Sardamani, 1999) ने अपने शोध–कार्य 'मातृवंशीयता में बदलाव' (Matriliny Transforming) में जेन्डर परिपेक्ष्य द्वारा मातृवंशीयता की अवधारणा की फिर से जांच की है। उनका तर्क है कि विरासत, उत्तराधिकार, विवाह और परिवार के विभिन्न कानूनों के कारण केरल के नायरो (Nayars) के बीच मातृवंशीय शासन में परिवर्तन हुए हैं।

ii) विवाह संस्था की पुनर्व्याख्या

नारीवादी विद्वानों का मानना है कि कैसे गठबंधन या विवाह महिलाओं के लिए अधीनता की एक प्रक्रिया है, जिससे वे उन समूहों, जैसे जाति व उप–जाति के हाथों में एक संसाधन बन जाते हैं, जिनके वे सदस्य हैं। जैसा कि गैल रूबिन

(Gayle Rubin) ने कहा है, महिला का आदान–प्रदान लघु रूप से यह दर्शाता है कि नातेदारी प्रणाली के सामाजिक संबंध यह निर्दिष्ट करते हैं कि महिलाओं नातों में पुरुषों के पास कुछ अधिकार है, लेकिन पुरुष नातों में महिलाओं के पास समान अधिकार नहीं... 'यह एक ऐसी प्रणाली है, जहां महिलाओं के पास अपने लिए पूर्ण अधिकार नहीं (1978)

रेमंड स्मिथ (Raymond Smith) का यह मानना है कि वेस्ट इंडियन क्रियोल समाज (Creole Society) में, 'विवाह' व 'अस्थायी मिलन' को विभिन्न प्रकार के मेल समझा जाता था। यह विभेदन एक वर्ग आधारित वर्गीकृत समाज में वंश, वर्ग और जेन्डर असमानताओं के अंतः क्रिया पर आधारित था। इसलिए स्मिथ के अनुसार, विवाह अलग से अध्ययन के लिए बहुत जटिल है, और इसलिए विवाह और सामाजिक संस्थाओं के सह–संबंध का अध्ययन जरूरी है। वह कहने की कोशिश करते हैं कि एकविवाही एकल परिवार (Monogamous Nuclear Family) को प्राप्त करने के लिए अस्थाई मिलन सिर्फ असफल प्रयास नहीं है।

iii) मां शिशु के बंधन पर सवाल उठाना

1980 के दशक तक नारीवादी मानवशास्त्रियों ने यह खोजना शुरू कर दिया कि अगर मा¡–शिशु संबंध के मानव प्रजनन के पार और दूसरे उद्देश्य हो सकते हैं, जैसे आर्थिक, राजनीतिक व वैचारिक। परिणामस्वरूप, उन्होंने मा¡–शिशु बंधन पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, साथ ही सवाल उठा प्रत्यक्ष पुरुष अधिकार और सामाजिक ढांचे में शक्ति और प्रतिष्ठा के असल गतिशीलता पर। इसके अलावा, अर्थ की बड़ी प्रणाली में ही जैविक सच अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। यह स्पष्ट रूप से जैक गुड्डी (Jack Goody) के शोध कार्य में दिखाई देता है, जहां घरेलू समूहों को आकार प्रजनन प्रक्रियाए¡ और संपत्ति के संचरण द्वारा दिया

जाता है। इसलिए, हम देखते हैं कि नारीवादी बताते हैं कि जेन्डर व नातेदारी कैसे परस्पर रचे जाते हैं। वे इस धारणा को भी चुनौती देते हैं कि प्राकृतिक अंतर (प्रजनन की क्षमता) के आधार पर जेन्डर के बीच अंतर को पूर्व–समाजिक और मौजूदा संस्कृति के पार कैसे देखते हैं। इसके अलावा, नारीवादी पुरुष और महिला के श्रेणियों के द्विभाजन को नकारते हैं।

बोध प्रश्न 3

नोट :–i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपना उत्तर मिलाइए।

1. विवेचन कीजिए कि कैसे नारीवादी मानवशास्त्रियों ने नातेदारी अध्ययन को पुनः रचित करने में योगदान किया है।

   _____

   _____

   _____

   _____

2. एक लघु नोट लिखिए कि कैसे नई प्रजनन तकनीकों ने मातृत्व और मातृभाव का अर्थ बदल दिया है।

   _____

   _____

   _____

   _____

7.5 सारांश

नातेदारी संबंधों को जाति, वर्ग और जेन्डर पहलू कई तरीकों से प्रभावित करते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इनकी परस्परता को समझा जाए। यह दृष्टिकोण मानवशास्त्र शोध में प्रभावी हुआ जब डेविड श्नेडर ने नातेदारी को एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में दर्शाया। तब तक, नातेदारी अध्ययन वंशावली, वंश और वैवाहिक संबंधों के अध्ययन तक सीमित था। यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण को नारीवादी मानवशास्त्रियों द्वारा और आगे बढ़ाया गया। नारीवादियों का ध्यान–केंद्र नई प्रजनन तकनीके और उनके जेन्डर पहलुओं से संबंध पर था। इन तकनीकों में मातृत्व, मातृभाव व वंश की अवधारणाओं की समझ पर प्रभाव डाला। 1990s के पश्चात नातेदारी अध्ययन में नई दिशा आई है, जिसमें अधिक ध्यान जेन्डर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों पर है।

7.6 संदर्भ

1. Collier, J. F., &Yanagisako, S. J. (1987). *Gender and Kinship: Essays Toward a Unified Analysis*. Stanford University Press.
2. Engel Fredrick (1884), *The Origin of the Family, Private,Property and the State*. Verso Books.
3. Dube Leela(1996). Kinship and Gender in South and Southeast Asia: patterns and contrasts.
4. Dumont, L. (1980). *Homo Hierarchicus: The Caste System and Its Implications*. University of Chicago Press

5. Fortes, M. (1959). 331. Descent, Filiation and Affinity: A Rejoinder to Dr. Leach: Man, 59, 206-212.Gold, Ann Grodzins, 1994, *Listen to the Heron's Words: Re-imagining Gender and Kinship in North India*, Delhi: OUP, Pp 30-72
6. Goody, J. (Ed.). (1975). *The Character of Kinship* (Vol. 17). Cambridge University Press.
7. Gough, E. K. (1959). "The Nayars and the Definition of Marriage". *The Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland*, 89(1), 23-34.
8. Karve, Irawati(1965).*Kinship Organization in India*, Asia Publishing House, Asia Publishing House.
9. Leach, E. R. (1951). *The Structural Implications of Matrilateral Cross-cousin Marriage.* The Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland, 81(1/2), 23-55.
10. Lévi-Strauss, C. (1969). *The Elementary Structures of Kinship* (No. 340). Beacon Press
11. Maher, V. (1987). Sewing the Seams of Society. Gender and kinship: Essays toward a unified analysis, 132-159.
12. Mayer Adrian. 1960, '*Caste and Kinship in Central India: A Village and its Region*, London, Routledge & Kegan Paul
13. PalriwalaRajniand Carla Risseeuw (eds.), 1996,*Shifting Circles of Support: Contextualising Kinship and Gender Relations in South Asia and Sub- Saharan Africa.* Delhi: Sage Publications [pp.190-
14. Radcliffe-Brown, A. R., & Forde, D. (1980). African systems of kinship and marriage. Routledge.220].
15. Reiter (1975), '*Towards an Anthropology of Women'*Monthly Review Press (1975)
16. Rosaldo, M. Z., &Lamphere, L. (1974),*Women, Culture and Society*. Stanford University Press
17. Rubin, G. S. (2007). *Thinking sex: Notes for a radical theory of the politics of sexuality* (pp. 166-203). Routledge.
18. Sacks, K. (1974). Engels revisited: Women, the organisation of production, and private property. In *Woman, culture, and society*, 133, 207.
19. K. Saradamoni, 1999.*Matriliny Transformed: Family, Law and Ideology in Twentieth Century Travancore*. New Delhi: Sage
20. Schneider, David Murray, 1964, *American Kinship: A Cultural Account*, University of Chicago Press

21. Schneider, D. M. (1984). *A Critique of the Study of Kinship*. University of Michigan Press
22. Silverblatt, I. (1988). Imperial dilemmas, the politics of kinship, and Inca reconstructions of history. In *Comparative Studies in Society and History*, 30(1), 83-102.
23. Strathern, M. (1995). Women in between: Female roles in a male world: Mount Hagen, New Guinea. Rowman & Littlefield.
24. Unnithan, M. (1993), Girasias and the politics of difference in Rajasthan: 'caste', kinship and gender in a marginalised society. *The Sociological Review*, 41: 92–121. doi:10.1111/j.1467-954X.1993.tb03402.x
25. Weiner Annette work (1976), *Women of Value, Men of Renown*, Univ. of Texas Press

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) 'जाति' शब्द स्पेनिश शब्द 'कॉस्टो' (Casta) से लिया गया है, जिसका अर्थ है– 'नस्ल', 'वंश' व प्रकार। जाति व्यवस्था, विशेष रूप से, भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जानी वाली स्तरीकरण की एक प्रणाली है, जहा¡ व्यक्ति को जन्म के आधार पर, चार वर्णों में की सदस्यता दी जाती है। निर्धारित सदस्यता के आधार पर व्यक्ति को व्यवसाय सौंपा जाता है। इस प्रकार जाति व्यवस्था व्यक्तियों को अलग–अलग व्यवसायों में निर्दिष्ट करते हुए विभिन्न समूहों में वर्गीकृत करती है।

2) इरावती कर्वे भारत को चार सांस्कृतिक क्षेत्रों में विभाजित करके जाति और रिश्तेदारी के बीच संबंधों की जांच करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग करती है। विभेदन से पता चलता है कि समाज में समाजिक व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रीय प्रतिमान क्या है। जाति विभिन्न प्रकार की हैं, क्योंकि पदानुक्रम व

जाति विभेदन और विभाजन है। नातेदारी के क्षेत्र में कर्वे सामंजस्य व संस्कृतिकरण की सभी प्रक्रियाओं पर ध्यान देती है।

बोध प्रश्न 2

1) नातेदारी के अध्ययन को सांस्कृतिक दृष्टिकोण देने वाले डेविड श्नेडर के अनुसार, सभी वर्गों की नातेदारी व्यवस्था एक समान है। अमरिकी नातेदारी प्रणाली के अपने अध्ययन में, उन्होंने मध्यम वर्ग का अध्ययन किया और माना कि यह निम्न वर्ग जैसा ही था। हालांकि, अपने अफ्रीकी अमेरिकियों के अध्ययन में केरोल स्टॉक यह तर्क देते हैं कि निम्न वर्ग में नातेदारी मध्यम व उच्च वर्गों से अलग है।

2) जेंडर, वर्ग और जाति का प्रतिच्छेदन, हमें विभिन्न समाजों के नातेदारी और नातेदारी संरचना के बीच संबंधों को समझने में मदद कर सकता है। ऐसा दृष्टिकोण महिलाओं को जाति व वर्ग के भाग के रूप में देखता और ना कि केवल शरीर के रूप में जिस पर पुरुषों का अधिकार है। (रैडक्लिफ ब्राउन का जैविक दृष्टिकोण) और जो समाज को एक–साथ जोड़ने का कार्य करता है। (लेवी–स्टार्स का गठबंधन दृष्टिकोण)। जाति, वर्ग और जेन्डर के पहलुओं को नातेदारी के अध्ययन में लेते हुए वादविवाद इस प्रकृति/जैविक व संस्कृति से परे ले जाता है। यह माना जाता है कि मानव सामाजिक व्यवहार की पूरकता मानव समाज के विशिष्ट विशेषता है।

बोध प्रश्न 3

1) 1990 के दशक में नातेदारी अध्ययन में एक नई दिशा आई है, जिसमें जेन्डर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों के

अध्ययन पर अधिक ध्यान दिया गया है। यह तर्क दिया गया है कि न केवल खून के संबंध और विवाह संबंध है, जो समाज के सदस्यों के बीच संबंधों को निर्धारित करते हैं, बल्कि शक्ति (सत्ता) के संबंध भी निर्धारित करते हैं। नातेदारी को न केवल अधिकारों और कर्तव्यों के संदर्भ में बल्कि शक्ति, अधीनता और समाज में सत्ता और प्रतिष्ठा हासिल करने की कार्यविधियों के संदर्भ में भी समझा जाने लगा। नारीवादी मानवशास्त्री नातेदारी पर विचार–विमर्श में व्यक्तित्व, जेन्डर और वंश के बीच संबंधों की समझ को महत्वपूर्ण पाया।

2) नई प्रजनन तकनीकें पश्चिमी नातेदारी मॉडल में मुख्य तब्दीलियां लाई है। यह मॉडल खून के रिश्तो और वैवाहिक गठबंधनों पर जोर देता था। इन तकनीकों ने परिवार संरचना की गतिशीलता को प्रभावित किया है और जिस तरह से हम मातृत्व और मातृभाव की परिकल्पना करते हैं। नई प्रजनन तकनीकें नातेदारी को एक प्रक्रिया के रूप में देखने का एक माध्यम है, जो सांस्कृतिक घटनाओं और संबंधों द्वारा रचित होती है। जैविक या वैवाहिक आधार की आवश्यकता नहीं, क्योंकि ये धर्म निरपेक्ष रूप से रचित होती है।

इकाई 8 : परिवार की पुनर्रचनाएँ

8.0 उद्देश्य

8.1 परिचय

8.2 क्लासिकल सिद्धांतों की नजर में परिवार

8.2.1. बुनियादी अवधारणाएँ और पद

8.2.1. विभिन्न समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

8.3. समस्याएँ और चुनौतियाँ

8.3.1. गोद लेकर परिवार बनाना

8.3.2. सौतेला परिवार : परिवार की पुनर्परिभाषा (स्टेप फैमिली)

8.4. परिवार के अध्ययन की नई दिशाएँ

8.4.1. सांस्कृतिक सिद्धान्त : रक्त और वैवाहिक संबंधों से परे

8.4.2. नारीवादी परिप्रेक्ष्य : सत्ता और भेद–भाव

8.5. परिवार के नए रूप

8.5.1. पसंद का परिवार (मर्जी से बनाया गया परिवार)

8.5.2. लिव–इन संबंध

8.5.3. एकल माता पिता वाला परिवार

8.5.4. सरोगेसी परिवार

8.6. सारांश

8.7. बीज शब्द

8.8. संदर्भ

8.9 बोध प्रश्न

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- समाजशस्त्र के क्लासिकल/प्रभुत्व–प्राप्त सिद्धांतों की परिवार की समझ के बीज खासियतों के बारे में बता सकेंगे।
- केवल क्लासिकल सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य से परिवार की समझ की समस्याओं और चुनौतियों की पड़ताल कर सकेंगे।
- सांस्कृतिक सिद्धांतकारों और नारीवादियों द्वारा की गई परिवार की आलोचना को म्संइवतंजम कर सकेंगे। समय के साथ परिवार के मायने के बदलने और उसके नातेदारी अध्ययन पर पड़े प्रभावों के बारे में बताने की स्थिति में होंगे।
- परिवार के नए रूपों की पड़ताल कर सकेंगे, जो पारंपरिक–जैविक परिवारों से भिन्न हैं।

8.1 परिचय

परिवार समाज की महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है। यह बुनियादी और सार्वभौमिक जैविक आवश्यकताओं, देखभाल और समाजीकरण को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसलिए समाजशास्त्र में परिवार को समाज की मौलिक/प्राथमिक संस्था कहा गया है। यद्यपि यह एक सार्वभौमिक संस्था है, फिर भी परिवार की परिभाषा में संस्कृति आधारित भिन्नताएं हैं। परिवार की कोई एक संरचना और स्वरूप नहीं है। कुछ संस्कृतियों में इसके तहत पति, पत्नी, बच्चे और अन्य नजदीकी नातेदार शामिल किए जाते हैं, तो कुछ में केवल पति, पत्नी और बच्चे। परिवार की संरचना और स्वरूप में इस तरह की भिन्नताएँ हो सकती हैं। लेकिन सबमें एक सामान्य बात यह

है कि इसके सदस्य वैवाहिक और रक्त–संबंधों के आधार पर एकीकृत होते हैं और एक ही घर में रहते हैं।

सामान्य तौर पर इतिहास के साथ न बदलने वाली स्थिर संस्था माना जाता है, जिसमें कोई बदलाव नहीं लाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि यह सामाजिक जीवन का अचर रूप और चीजों के प्राकृतिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है (Mitterauer and Sieder 1982: 1)। जबकि हकीकत यह है कि परिवार के अर्थ के साथ–साथ उसकी संरचना में भी कई बदलाव होते रहे हैं। समकालीन समय में परिवार के रूप में कई व्यवस्थाएं और स्वरूप उभर कर सामने आए हैं जो पारंपरिक स्वरूपों से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान का द्योतक हैं। कई इसे परिवार के संकट और इसके भविष्य को चुनौती देने वाले संकेत के रूप में देखते हैं। परिवार लगातार विकसित होता और अपने रूप बदलता रहा है। इन बदलावों की रोशनी में परिवार की पारंपरिक समझ पर सवाल उठाने और नए दृष्टिकोण से उसकी पड़ताल की कोशिशें की गई हैं। लेकिन इन पर चर्चा करने से पहले ये उचित होगा कि हम परिवार की पारंपरिक (क्लासिकल) समझ को जान लें।

8.2 परिवार क्या है : क्लासिकल समाजशास्त्र

"परिवार" की कोई एक स्पष्ट परिभाषा नहीं है। इसका उपयोग या तो व्यापक अर्थों में किया जाता है (एक सामान्य पूर्वज के सभी वंशज, जैसे कि "पारिवारिक वृक्ष") या संकीर्ण अर्थ में माता–पिता और बच्चों के साथ रहने वाली एक "इकाई" के रूप में। समाजशास्त्र में परिवार को एक इकाई के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें रक्त और वैवाहिक संबंधों से जुड़े लोग एक साथ रहते हैं। परिवार के लिए कुटुम्ब, गृह, कुल, वंश आदि जैसे विभिन्न पदों का प्रयोग किया जाता है। वामसा, परिवार को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। परिवार को "सांस्कृतिक आदर्श और पहचान का केंद्र" के रूप में देखा जाता है (कारलेकर 1998रू 1741)। पारंपरिक अर्थों में परिवार को चीजों के प्राकृतिक क्रम के रूप में देखा जाता है जो विवाह, मातृत्व–पितृत्व, और सहवास/निवास –ये तीन तत्वो के प्रतिच्छेद/मिलन विंदु पर स्थित होता है। परिवार को विशेष रूप से बच्चों और उनके जीवन की रक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा प्रदान करने वाली पहली संस्था माना जाता है। इसे

पालन–पोषण और भावनात्मक बंधन के एक प्रमुख स्रोत के रूप में भी देखा जाता है। इस तरह की अवधारणाएं परिवार और उसके कार्यों के विवरण के अनुरूप हैं। इसलिए, क्लासिकल सिद्धांतों में परिवार को इन तीन तत्वों के संयोजन के रूप में समझा गया हैरू विवाह, पितृत्व–मातृत्व और निवास। परिवार की प्रचलित समझ में जैविक कारक को सर्वोपरि समझा जाता है। एक विषमलैंगिक वैवाहिक घर, परिवार के गठन के लिए मूलभूत माना जाता है।

8.2.1. बुनियादी संकल्पनाएँ और परिभाषा

ऐसी कई अवधारणाएँ हैं जिन्हें अक्सर परिवार का पर्यायवाची माना जाता है लेकिन समाजशास्त्र में उनके बीच स्पष्ट अंतर किया जाता है। इसके अलावा, परिवार की कोई एक परिभाषा नहीं है। दरअसल, परिवार को परिभाषित करने के दृष्टिकोण और उद्देश्य पर परिभाषा निर्भर करती है। आइए इस हिस्से में हम परिवार की समझ के लिए बुनियदी अवधारणाओं और परिभाषाओं पर एक अंजर डालें।

8.2.1.1. घर

एक घर को 'व्यक्तियों के ऐसे समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक साथ एक ही जगह रहते हैं और अपनी–अपनी आमदनी को एकत्रित और साझा करते हैं। जिसकी पुष्टि उनके नियमित रूप से साथ भोजन करने अथवा खाना पकाने के साझे बर्तन से होती है' (स्कॉट और मार्शल, 2005)। दूसरे शब्दों में, घर निवास की बुनियादी इकाई होता है जहाँ आर्थिक उत्पादन, उपभोग, उत्तराधिकार, बच्चों का पालन–पोषण और आसरे का आयोजन और संचालन किया जाता है। घर (घर) आवासीय और घरेलू इकाई है जिसमें एक या एक से अधिक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही रसोई (चूल्हा/चूल्हा) में पका हुआ खाना खाते हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार यह जरूरी नहीं कि परिवार को परिभाषित करने में घर हमेशा एक अनिवार्य तत्व हो ही। लोग एक परिवार का सदस्य होने के बावजूद एक साथ घर में नहीं भी रह रहे हो सकते हैं। भारतीय संदर्भ को ध्यान में रखते हुए ए. एम. शाह (1968 : 129) कहते हैं कि दो भाई और उनके बच्चे

अलग–अलग घरों में रह सकते हैं, लेकिन वे कई तरह के रिश्तों से बंधे हो सकते हैं। वे आर्थिक गतिविधियों में सहयोग कर सकते हैं, संपत्ति साझी रख सकते हैं, कई अवसरों पर एक–दूसरे की मदद कर सकते हैं तथा त्योहारों, अनुष्ठानों और समारोहों में इकट्ठे शिरकत कर सकते हैं। यह सामान्य बात है, जो घर और परिवार के बीच अंतर के महत्व पर प्रकाश डालती है। इस प्रकार, दो या दो से अधिक घर अलग होने के बावजूद एक ही परिवार का हिस्सा हो सकते हैं (वही)

8.2.1.2. परिवार और घर के बीच अंतर

परिवार नातेदारी के सिद्धांतों पर आधारित होता है जिसके सदस्य आमतौर पर एक समान निवास साझा करते हैं। वे एक घर में रहते हैं। इस आवासीय इकाई को गृहस्थी कहते हैं। घर के सदस्य परस्पर संबंधों से जुड़े होते है। ये संबंध सदस्यों के लिए अपेक्षित भूमिकाओं और तदनुसार परिवार में उनकी जगह/स्थिति से जुड़े होते हैं। परिवार एक सहभोज और सह–निवासी समूह/इकाई है। ए. एम. शाह के अनुसार, परिवार और घर के बीच का अंतर, परिजनों और और निवास के नियमों पर आधारित होते हैं।

घर परिवार का विस्तार है। परिवार एक घर हो सकता है लेकिन घर को परिवार होने की आवश्यकता नहीं है। लोगों का एक समूह एक साथ रह सकता है, भले उनके बीच कोई नातेदारी संबंध न हो। उदाहरण के लिए फ्लैट मेट (जैसे छात्र), अपनी इच्छा से साथ रहने वाले लोग, प्रवासी श्रमिकों का बहुसदस्यीय घर। एक परिवार में न केवल घर होता है बल्कि अक्सर परिवार दो या दो से अधिक घरों का विस्तार होता है, जिसके सदस्य अलग–अलग रह रहे हो सकते हैं, फिर भी एक ही परिवार से संबंधित हो सकते हैं तथा उनके बीच पारिवारिक बंधन और जिम्मेदारियाँ हो सकती हैं। परिवार एक कार्यात्मक इकाई तो है है, लेकिन उससे भी बढ़कर वह एक वैचारिक और भावनात्मक इकाई। जबकि घर को एक कार्यात्मक इकाई के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

भारतीय सामाजिक संरचना को समझने के लिए 'परिवार' की बजाय 'घर' को विश्लेषण की इकाई के रूप में लेना अधिक उपयुक्त है। शाह के अनुसार परिवार '...

पिता पक्ष से संबंधित पुरुषों, उनकी पत्नियों और अविवाहित बहनों और बेटियों के घरों का एक समूह है' (शाह, 1976, ओबेरॉय, 1993, पृष्ठ 420)। इसलिए अध्ययन का उचित उद्देश्य परिवार की बजाय घरेलू आयाम होना चाहिए (ओबेरॉय, 2001, पृष्ठ.15)। परिवार और घर के बीच का अंतर हमें भारत में परिवार में हो रहे परिवर्तनों को उनकी संरचना के संदर्भ में समझने में मदद करता है।

8.2.1.3. घरेलू समूह

घरेलू समूहों को एक साथ रहने वाले और घरेलू जीवन की गतिविधियों को साझा करने वाले लोगों के समूह के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इसे अक्सर घर के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किया जाता है, जहां कई परिवार कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं लेकिन खुद को एक नातेदारी की एक इकाई मानते हैं। घरेलू समूह मूल रूप से संसाधनधारक और उत्पादन इकाई हैं। वे एक साथ रह रहे हैं (और आमतौर पर भोजन कर रहे हैं), और विशेष रूप से पारिवारिक संपत्ति पर समूहिक नियंत्रण कर रहे हैं। मेयर फोट्र्स ने घरेलू समूहों को एक हाउसहोल्डिंग और हाउसकीपिंग समूह के रूप में परिभाषित किया है, जो अपने सभी सदस्यों के सबके विकास के लिए आवश्यक संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है। फोट्र्स के अनुसार, प्रत्येक घरेलू समूह एक चक्रीय विकास से गुजरता है। घरेलू समूह के विकास चक्र में तीन मुख्य चरण होते हैं। विस्तार का पहला चरण दो व्यक्तियों के विवाह से लेकर उनके संतानोत्पत्ति तक पूरा होता है। फैलाव दूसरा चरण बड़े बच्चे के स्कूल या नौकरी या फिर, विवाह कर परिवार से बाहर जाकर रहने से शुरू होता है। यह अवधि तब तक जारी रहती है जब तक कि सभी बाहर नहीं चले जाते या या उनकी शादी नहीं हो जाती। उसके बाद बच्चों के परिवारों द्वारा स्थापित परिवार की सामाजिक संरचना में प्रतिस्थापन के चरण की बारी आती है। का चरण है।

8.2.1.4. घरेलू समूह और परिवार के बीच अंतर

लैटिन में परिवार का मूल अर्थ श्घरेलू समूहश् के समान है, लेकिन समाजशास्त्र में दोनों में इस आधार पर भेद किया जाता है कि कुछ घरेलू समूह ऐसे व्यक्तियों द्वारा

बनते हैं जिनका अपसा में कोई नातेदारी संबंध नहीं होता है। वहीं, एक परिवार के सदस्य, दो या अधिक घरेलू समूहों में बंटे हो सकते हैं। एकल परिवार और घरेलू समूह की वास्तविक संरचना एक समान हो सकती है। हालांकि, सामाजिक प्रजनन की हमारी जो अवधारणा है, उसमें प्रजनन कार्यों को भोजन के उत्पादन और आश्रय तथा बड़े पैमाने पर समाज की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए गैर–भौतिक साधनों के बीच भेद करके चला जा सकता है। दूसरे शब्दों में, घरेलू क्षेत्र को सामाजिक संबंधों की प्रणाली कहा जा सकता है जो प्रजनन केंद्र होता है और परिवेश तथा समग्र समाज की संरचना के साथ एकीकृत होता है।

8.2.2 समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

समाजशास्त्र परिवार को कई परिप्रेक्ष्यों से विश्लेषित करता है। उनमें चार प्रमुख सैद्धान्तिक दृष्टियाँ इस प्रकार हैं:

- प्रकार्यवाद
- संघर्ष सिद्धांत
- सामाजिक अंतःक्रियावाद
- नारीवादी दृष्टिकोण

ये परिप्रेक्ष्य परिवार की बतौर सामाजिक संस्था, विविध तरह की समझ प्रदान करते हैं।

8.2.2.1 प्रकार्यवाद – प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य परिवार को एक महत्वपूर्ण संस्था मानता है। इसके अनुसार, समाज और व्यक्तियों के लिए परिवार काफी महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। उन्होंने परिवार का उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के संदर्भ में विश्लेषण किया है और ज्यादातर सकारात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला है। इस सिद्धान्त की मानें तो समाज विभिन्न भागों से बनी एक प्रणाली है जो एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। जॉर्ज मर्डॉक और टैल्कॉट पार्सन्स जैसे समाजशास्त्रियों ने परिवार की प्रकार्यवादी समझ विकसित की है। जॉर्ज मर्डॉक ने अपने विचार *सामाजिक*

संरचना (1949) में व्यक्त किए। टैल्कॉट पार्सन्स ने मर्डॉक की धारणा को आगे बढ़ाया। जॉर्ज मर्डॉक ने लिए परिवार के ने चार ये कार्य गिनाए – यौन–व्यवहार का नियमन, प्रजनन, आर्थिक सहयोग और समाजीकरण। टैल्कॉट पार्सन्स ने कहा की परिवार परिवार की महत्ता इसके द्वारा बच्चों के प्राथमिक समाजीकरण और वयस्क व्यक्तित्व को संतुलन प्रदान किए जाने में है।

प्रकार्यवादी सिद्धांतों द्वारा परिवार के इन कार्यों की बात की है:

• परिवार जैविक रूप से दो वयस्क सदस्यों को एक जोड़े के रूप में एक साथ यौन रूप से रहने और सामाजिक निरंतरता को बढ़ाने के लिए एक वैध मंच प्रदान करता है।

• परिवार आश्रय प्रदान करता है और भोजन सेवन को पूरा करने की बुनियादी चयापचय (मेटाबोलिक) आवश्यकता को पूरा करता है।

• परिवार एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है जिसमें सदस्य उत्पादक गतिविधियों में भाग लेते हैं; सदस्य समान या भिन्न कार्य कर सकते हैं

• परिवार में व्यक्ति की उम्र, लिंग और स्थिति और यहाँ तक कि व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर घरेलू कार्यों का बँटवारा या आवंटन किया जाता है।

8.2.2.2 संघर्ष सिद्धांत यह मानता है कि सामाजिक समूहों के बीच संघर्ष समाज की विशेषता है। असमान सत्ता और प्रतिस्पर्धी हितों वाले समूह उन संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जो कम हैं। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार पितृसत्तात्मक मूल्यों को बनाए रख कर, पारिवारिक संरचना लैंगिक और आर्थिक असमानता को बढ़ावा देती है और इस तरह, सामाजिक असमानता में अपना योगदान देती है। उदाहरण के लिए, परिवार के भीतर संपत्ति का अंतर्पीढ़ीय असमानता को पैदा करने के साथ–साथ उसे बरकरार रखता है।

8.2.2.3 सामाजिक अंतःक्रियावाद एक सामाजिक सिद्धांत है जो प्रतीकों के अर्थ के संदर्भ में व्यक्तियों के अंतरूक्रिया, व्याख्या और समायोजन के पैटर्न के विश्लेषण पर केंद्रित है। यह परिप्रेक्ष्य इस बात पर जोर देता है कि परिवार, एक ही जगह इकट्ठे होकर भोजन और छुट्टियों जैसी प्रतीकात्मक प्रतीकात्मक प्रक्रिया के जरिए बंधनों को सुदृढ़ और पुनर्जीवित करते हैं। यह परिप्रेक्ष्य परिवार के बदलते अर्थों पर भी बात करता है। इस सिद्धांत का तर्क है कि साझा गतिविधियाँ परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक बंधन बनाने में मदद करती हैं, और यह कि विवाह और पारिवारिक संबंध बातचीत के अर्थ पर आधारित होते हैं।

बोध प्रश्न 1

1. वे कौन से तीन तत्व हैं जो प्रचलित समझ के अनुसार परिवार की विशेषता बताते हैं?

.....
.....
.....
.....

2. कार्यात्मक सिद्धांतों द्वारा बताए गए परिवार के किन्हीं चार कार्यों का उल्लेख कीजिए।

.....
.....
.....
.....

8.3. क्लासिकल सिद्धान्त की समस्याएँ और चुनौतियाँ

इस खंड में जुड़ाव या संबद्धता के विचार पर विस्तार से बताया गया है, जैविक रूप से पारंपरिक स्थापित नातेदारी और पारिवारिक संबंधों के विपरीत ठहरते हैं। इसमें गोद लेने पर आधारित आत्मीयता और समलैंगिक संबंधों/रिश्तेदारी फोकस

किया गया है। समकालीन समाज में, जब परिवार को सुरक्षित आश्रय के रूप में पेश किया जाता है तो बहुत–सी अनिश्चितताएँ सामने आती हैं। सवाल यह उठता है कि क्या प्रत्येक संस्कृति में परिवार अपने सदस्यों को भावनात्मक और शारीरिक सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम है। उत्तर नकारात्मक ही होगा। विशेष रूप से अपनों ही द्वारा बाल यौन शोषण में हो रही वृद्धि, संपत्ति को लेकर भाई–बहनों के बीच विवादों में बढ़ोतरी, महिलाओं के साथ बढ़ती घरेलू हिंसा और बढ़ता, साथ ही समलैंगिकों/ट्रांसजेंडरों के मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को देखते हुए परिवार हरगिज सुरक्षित आश्रय नहीं रह जाता है। परिवार को सहमति दे रहे दो व्यक्तियों के बीच मिलन के रूप में भी परिभाषित नहीं किया जा सकता है। बल्कि कई लोगों ने बिना इच्छा या विकल्प के परिवार में पैदा होने के तथ्य पर सवाल उठाना शुरू कर दिया है और इसलिए पसंद या इच्छा से बनाए गए परिवार की धारणा पनपी है।

8.3.2. गोद लेकर परिवार बनाना

गोद उन लोगों के बीच माता–पिता और बच्चे का पारिवारिक संबंध बनाता है जो स्वाभाविक या जैविक रूप से संबंधित नहीं हैं। यह मातृत्व या पितृत्व के एकमात्र आधार के रूप में जीव विज्ञान की अनिवार्यता को चुनौती देता है। संक्षेप में, यह कानून के माध्यम से जुड़ाव की ओर ध्यान आकर्षित करता है। ऐतिहासिक रूप से, लगभग सभी समाजों में गोद लेने की रीति रही है। यह सभी मनुष्यों के पितृत्व या मातृत्व प्राप्त करने के विचार की केंद्रीयता को दर्शाता है। हालाँकि, पारंपरिक संदर्भों में गोद लेने का उद्देश्य आज के उद्देश्य से काफी भिन्न है। प्राचीन काल में निःसंतान दंपतियों ने राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक कारणों से पुरुष वंश की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए गोद लेने का सहारा लिया है। नतीजतन, तब पुरुष या लड़के को अपनाना मुख्य रूप से प्रचलित था। तब बच्चे के कल्याण और भलाई का पहलू महत्वपूर्ण नहीं था। इसके विपरीत, गोद लेने से संबंधित आधुनिक कानून मूल रूप से बच्चे के कल्याण से जुड़ा हुआ है। यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम विश्व युद्ध के बाद की अवधि में इस विचार को बल मिला क्योंकि बड़ी संख्या में बच्चे अनाथ हो गए थे और नाजायज संतानों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई थी। बाद में मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विषयों के विद्वानों के

अध्ययनों से इस विचार को बल मिला कि बच्चे के विकास पर स्थिर पारिवारिक जीवन के सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं।

वर्तमान संदर्भ में, निःसंतान दंपत्ति तो गोद ले ही सकते हैं। सह ही, कोई अविवाहित वयस्क अकेले भी गोद लेकर एकला माता या पिता की भूमिका निभा सकता है। गोद लेना समलैंगिक जोड़ों और उन व्यक्तियों के लिए भी व्यवहार्य विचार है जो अपना एक स्वतंत्र परिवार शुरू करना चाहते हैं। हालाँकि, भारत में संविधान की धारा 377 को निरस्त करने के बावजूद, जिसने समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया है, समलैंगिक अभी भी गोद लेने के योग्य नहीं हैं। गोद लेने के संबंध में विभिन्न देशों में अलग–अलग कानून और कानूनी प्रक्रियाएं हैं। भारत में किशोर न्याय (देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 गोद लेने के प्रावधान और मानदंड बताता है। इस अधिनियम के अनुसार गोद लेना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से दत्तक बच्चे को उसके जैविक माता–पिता से स्थायी रूप से अलग कर दिया जाता है और वह जैविक बच्चे से जुड़े सभी अधिकारों और दायित्वों के साथ दत्तक माता–पिता की वैध संतान बन जाता है। अधिनियम भारत में का पांच प्रकार के गोद लेने को मान्यता देता है। इनमें छोड़ दिए गए, दे दिए गए, देश या विदेश में रहने वाले असंबद्ध व्यक्तियों द्वारा बेसहारा बच्चों का गोद लिया जाना शामिल है। इसी तरह, किसी बच्चे को देश के भीतर और बाहर रहने वाले रिश्तेदारों द्वारा गोद लिया जा सकता है। साथ ही, सौतेले माता–पिता देश के भीतर बच्चों को गोद ले सकते हैं।

8.3.2. सौतेला परिवाररू परिवार की पुनर्परिभाषा

सौतेले परिवार कोई नई बात नहीं हैं। वे हमेशा से मौजूद रहे हैं। लेकिन 1970 के दशक से पहले समाजशास्त्रीय और मानवशास्त्रीय अध्ययनों ने उनकी तरफ गौर नहीं किया था। अब दो आधारों पर सौतेले परिवारों का बहुत अध्ययन हुआ है। पहला, कई पश्चिमी देशों के साथ–साथ भारत में पुनर्विवाह के मामले बढ़ने के कारण सौतेले परिवारों या मिश्रित परिवारों के मामले बढ़ गए हैं।

सौतेले परिवार को ऐसे परिवार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें माता–पिता में से कम–से–कम एक का बच्चा या पिछले संबंध से हो। इस परिभाषा के अनुसार सौतेले परिवार, रक्त आधारित परिवार की पारंपरिक परिभाषा में फिट नहीं बैठते हैं और ऐसे परिवारों में कई तरह के संघर्ष भी चल रहे हैं। सौतेले परिवार में बच्चे एक जैविक या दत्तक माता–पिता के साथ रह सकते हैं, या वे प्रत्येक जैविक या दत्तक माता–पिता के साथ कुछ–कुछ समय के लिए रह सकते हैं

सौतेले परिवार कई कारणों से एकल–जैविक परिवारों से भिन्न होते हैं। सौतेले परिवारों में समस्याएँ, पिता या माता के पुनर्विवाह से परिवार में नए सदस्य के प्रवेश से उपजती हैं। समस्या केवल बच्चे को लेकर नहीं बल्कि सदस्यों के बीच जिम्मेदारियों को साझा करने को लेकर भी उत्पन्न होती है। ऐसे परिवारों में माता–पिता की जिम्मेदारी की पूरी धारणा बदल जाती है। वे सदस्यों को रहने की जगह साझा करने, संबंध विकसित करने, पिछले पति या पत्नी के साथ संबंधों पर बातचीत करने के साथ–साथ भावनात्मक और मानसिक मुद्दों का भी सामना करना पड़ता है।

8.4 क्लासिकल सिद्धांत की आलोचना

समाजशास्त्र में परिवार की परिभाषाएं जीव विज्ञान की पश्चिमी सांस्कृतिक समझ और परिवार के गठन को केंद्र में रखकर रची जाती रही हैं। 1970 के दशक से पहले, अधिकांश समाजशास्त्री परिवार को घर से अलग करने और औद्योगीकरण के कारण होने वाले सामाजिक परिवर्तनों की तुलना के लिए इसका उपयोग करने के कार्य में लगे हुए थे। परिवार की प्रमुख धारणा सदस्यों के लिए प्रजनन की जगह तथा बढ़ती तार्किकता और वैज्ञानिकता के प्रभाव के समक्ष एक सुरक्षित आसरे के रूप में थी। इसमें 1970 के दशक के बाद बदलाव आना शुरू हुआ, जब परिवार के प्रकार्य की पारंपरिक समझ को चुनौती मिलनी शुरू हुई। परिवार को उसकी लचीली प्रकृति के संदर्भ में परिकल्पित किया जाने लगा, जो नातेदारी के एक प्रदत्त जैविक तथ्य और उसकी सामाजिक, निर्मित और प्रक्रियात्मक के बीच के विभाजन द्योतक है।

यह हिस्सा परिवार को सामान्य रूप से एक संस्था के रूप में देखता है, और विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में, इसकी आलोचना करते अध्ययनों के बारे में विस्तार से बताता है। ये आलोचनाएँ इसलिए प्रासंगिक हैं कि वे जैविक और वैवाहिक संबंधों से परे वैकल्पिक वैकल्पिक व्यवस्थाओं को समझने के लिए परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं।

8.4.1. सांस्कृतिक सिद्धान्त: रक्त और वैवाहिक संबंधों से परे

सांस्कृतिक सिद्धांतकारों ने यह दावा किया कि परिवार की क्लासिकल परिभाषाएं, जीव विज्ञान और उसके नातेदारी के साथ संबंधों के बिना जाँचे या पड़ताल से काफी प्रभावित थीं। उनका मुताबिक परिवार का अध्ययन करने वाले समाजशास्त्री के पास केवल दो काम थे। एक तो पहला परिवार की घर से तुलना और उनके बीच भेद करना और दूसरा, औद्योगीकरण के प्रभाव के कारण होने वाले बदलावों की पड़ताल करना। जैसा कि पिछले हिस्से में हमने पाया, परिवार को एक प्रकार्यात्मक इकाई के रूप में परिभाषित किया गया था, जहाँ प्रजनन, भावनात्मक संबंध और अन्य घरेलू कार्यों का निष्पादन होता था। हालाँकि, 1980 के दशक के बाद, परिवार के सिद्धांतों में परिवर्तन दिखाई देने लगे। विशेष रूप से, नातेदारी के अध्ययन में, जहाँ परिवार की सार्वभौमिकता और इसके सामाजिक उद्देश्यों के बारे में पारंपरिक अंतर्निहित धारणाओं पर बहस हुई और अंततः उन्हें खारिज किया गया।

परिवार को लचीले प्रकृति वाली संस्था के रूप में परिकल्पित किया जाना शूर किया गया जो नातेदारी के प्रदत्त रूप तथा उसके सामाजिक, निर्मित और प्रक्रियात्मक रूप के बीच के भेद से प्रदर्शित हो रहा था।

इस तरह परिवार को एक आदर्श एकल परिवार और पुनरुतपादन के जैविक बंधनों से परे परिकल्पित किया जाने लगा। परिवार के अर्थ को दो स्तरों पर पुनर्रचित किया गया है:

1. अब बच्चे उसके लिए पूर्व शर्त नहीं रह गए हैं और

2. दोस्तों को शामिल करने के लिए पारिवारिक संबंधों को विस्तारित किया गया है।

परिवार की इस तरह की समझ ने परिवार संबंधी विमर्श व्यापक बना दिया जिसके मायने रोजमर्रा की परिस्थितियों में लगातार पुनर्व्यवस्थित किए जाते थे। आर्थिक वास्तविकताओं, जेंडर भूमिकाओं और नातेदारी की अवधारणाओं में बदलाव के कारण समकालीन उत्तर–औद्योगिक पारिवारिक जीवन की रचनात्मक प्रकृति को जाहिर करने के लिए जूडिथ स्टेसी ने ब्रेव न्यू फैमिलीज फिकरे का प्रयोग किया है। समलैंगिक परिवार के सिद्धांत ने विषमलैंगिक परिवार की धारणा के आदर्श को चुनौती चुनौती दी। परिवारों के नए अवधारणाकरण में ज़ोर मानवीय संपर्क, जेंडर संबंध और माता–पिता के साथ बच्चे के संबंध दिया गया है। सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के अनुसार, परिवार निर्माण के वैकल्पिक तरीके हैं जो विशुद्ध रूप से जैविक या विवाह संबंधों पर आधारित औपचारिक उद्देश्यों की जगह जुड़ाव के व्यक्तिपरक अर्थ को दर्शाते हैं।

8.4.2 नारीवादी परिप्रेक्ष्यः सत्ता और भेद–भाव

मुख्यधारा के अध्ययनों ने परिवार को सहयोग, सद्भाव, सामान्य हितों और समानता पर आधारित एक अनिवार्य सामाजिक संस्था के रूप में वर्णित किया है। काफी हद तक उन्होंने परिवार के भीतर 'पुरुष' को अपने अध्ययन की मूल इकाई के रूप में भी लिया है और महिला के अनुभवों की उपेक्षा की है। नारीवाद ने परिवार के एक सहकारी, सामंजस्यपूर्ण और समतावादी क्षेत्र होने के इस दावे को चुनौती दी। नारीवादियों यह दिखाने की कोशिश की है कि सभी सदस्यों के समान योगदान के आधार पर बनाए गए और पारस्परिक रूप से लाभप्रद संस्था होने की जगह, परिवार में बड़े पैमाने पर महिला श्रम का शोषण होता है। नारीवादी आलोचनाएँ, परिवार में निहित सत्ता की कार्यप्रणाली पर ध्यान केंद्रित कर उसकी पड़ताल करती हैं। वे पदानुक्रम और यौन दमन पर प्रकाश डालती, जो परिवार के अंतर्गत आते हैं। इस

तरह नारीवादी आलोचनाएँ परिवार के असमानतावादी और दमनकारी चरित्र को सामने लाती हैं।

मार्क्सवादियों और प्रकार्यवादियों के समान नारीवादियों ने यह तर्क दिया है कि परिवार अनिवार्य रूप से एक रूढ़िवादी संस्था है, जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कार्य करता है। हालाँकि वे इस बात को लेकर प्रकार्यवादियों से असहमति और मार्क्सवादियों से सहमति दर्ज करती हैं कि इससे समाज के एक शक्तिशाली समूह को ही लाभ होता है। नारीवादियों के लिए, यह समूह समूची पुरुष जमात है। उनका कहना है कि परिवार पितृसत्ता को सरक्षण, समर्थन और सहारा देता है। नारीवादी परिवार के भीतर मौजूद असमान सत्ता संबंधों को मान्यता नहीं देने के लिए नारीवादी, मुख्यधारा के सिद्धांतों की आलोचना करते हैं जो महिला के जीवन और अधिकारों की कीमत पर पितृसत्ता को बनाए रखने में मदद करते हैं। ओकिन (1989) का मानना है कि समाज की आधारभूत संस्था परिवार से ही न्याय गायब है। वह विस्तार से बताती हैं कि विवाह और पारंपरिक पारिवारिक संरचना में महिलाओं की निर्भरता और शोषण और उनके प्रति दुर्व्यवहार की संभवना बढ़ जाती है। ओकिन ने न्याय–विषयक पारंपरिक विद्वत्ता की आलोचना की है जो परिवार को महान संस्था, नैतिक समुदाय और 'विस्तारित स्नेह' के उदाहरण के रूप में पेश करती है। नारीवादी आलोचना पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं में श्रम के असमान विभाजन पर सवाल उठाते हुए हमें जेंडर असमानता से अवगत कराती है, जहाँ महिलाओं को घर का काम–काज करने और बच्चों का पालन–पोषण करना होता है और पुरुष जीविकोपार्जन का काम करते हैं। इससे पुरुषों पर महिलाओं की आर्थिक निर्भरता बढ़ जाती है और उनमें से कई तलाक से डरती हैं, हिंसा और दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं। इसके अलावा, जब महिलाएं घर से बाहर काम की तलाश करती हैं, उन पर पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी बोझ बना ही रहता है। यानी महिलाओं द्वारा जीविकोपार्जन करने पर भी परिवार में उनके साथ न्याय नहीं होता। स्थिति पूर्ववत ही बनी रहती है (पगाक 1990:1822)।

वहीं, राजस्थान की वाचिक लोक परंपरा में स्त्री की छवि की अध्येता रहेजा और गोल्ड (1996) ने इस तरफ ध्यान दिलाया है कि महिलाओं के लोकगीतों में किस तरह परिवार की पारंपरिक अवधारणा और उसमें स्त्रियों की स्थिति की आलोचना हुई है। लेकिन इनमें महिलाओं की सकारात्मक छवि की अभिव्यक्ति ही हो पाई है।

कहने का आशय यह कि महिलाएं अपने दौयम दर्जे के प्रति सचेत होकर अपनी छवि को सकारात्मक रूप में पेश करती हैं, लेकिन वे असमानताओं, हानियों और यौन–दमन को खारिज या उनका विरोध नहीं करती हैं। कारलेकर (1998) ने भारतीय संदर्भ में परिवार को हिंसा के स्थल के रूप में चिन्हित किया है और इसलिए, इसे सांस्कृतिक तौर पर आदर्श माने जाने की धारणा पर सवाल उठाया है। अपनी बात को रखने के लिए उन्होंने जीवन–चक्र दृष्टिकोण का उपयोग किया है और दिखाया है कि मायका हो या ससुराल, खासकर लड़कियों और बाद में, महिलाओं के साथ हर स्तर पर हिंसा होती है (पृष्ठ 1741) । कि हर स्तर पर भेदभाव और हिंसा होती है, विशेष रूप से बालिकाओं और बाद में घर की महिलाओं के खिलाफ, या तो जन्म या वैवाहिक । इस संदर्भ में वे कन्या भ्रूण हत्या, बाल श्रम और दांपत्य हिंसा आदि जैसी पारिवारिक हिंसाओं पर फोकस करती हैं।

बोध प्रश्न 2

1. परिवार की एक जैविक इकाई की समझ को सांस्कृतिक सिद्धांत कैसे चुनौती देता है? तीन/चार पंक्तियों में उत्तर लिखें

.....

.....

.....

.....

2. परिवार की संस्था के बारे ओकिन की क्या धारणा है? (एक संक्षिप्त पैराग्राफ में विस्तार से बताएं)

.....

.....

.....

.....

8.5. परिवार के नए रूप

औद्योगीकरण, महिलाओं की बढ़ती स्वतंत्रता, शिक्षा के स्तर में वृद्धि, आर्थिक बदलाव, कानून, नारीवादी समालोचना और राजनीतिक विमर्शों जैसे कारकों और अन्य कई ताकतों के कारण परिवार के रूप में बदलाव होते रहे हैं। परिवार उनसे प्रभावित होता रहा है। 1970 के दशक से परिवार की संरचना में परिवर्तन होते रहे हैं। परिवार के नए रूप सामने आए हैं। जैसे, एकल माता या पिता परिवार, समलैंगिक या पसंद के परिवार, बिना विवाह के लिव–इन। इन रूपों को 'गैर–पारंपरिक' परिवार कहा गया, क्योंकि वे जैविक और गठबंधन के आधार पर बने परिवार की शास्त्रीय परिभाषा में फिट नहीं बैठ रहे थे। हालाँकि, कई अकादमिकों ने परिवार के उन रूपों के संदर्भ में 'नया परिवार' शब्द का उपयोग करना पसंद किया जो बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक मौजूद नहीं थे या दिखाई नहीं दे रहे थे। इस खंड में कुछ ऐसे ही पारिवारिक पैटर्न और व्यवस्थाओं पर विचार किया गया है, जो परिवार की पारंपरिक समझ से परे ठहरते हैं।

8.5.1 पसंद का परिवार

पसंद या मर्जी से चुने गए परिवार पद का प्रयोग कैथ वेस्टन ने उसे 'जैविक परिवार' से भिन्न दर्शाने के लिए किया था। वेस्टन के अनुसार, "नातेदारी स्थायी, अटूट और जन्म या रक्त से जुड़े होने की बजाय प्रयास या चयन से बनाई गई प्रणाली के रूप में दिखलाई देने लगी"। वेस्टन का अध्ययन समलैंगिकों के बीच के संबंध के संदर्भ में परिवार और नातेदारी को पुनरपरिभाषित करने के लिए महत्वपूर्ण आधार मुहैया करता है। यह सुझाता है कि परिवार के निर्माण के लिए लोगों के पास एक विकल्प है यह वंशावली के आधार पर नातेदारी पर सवाल उठाता है और इसे जांच के दायरे में लाता है। इसका मतलब यह है कि नातेदारी को प्रजनन के आधार पर परिकल्पित करने की जरूरत नहीं है। वेस्टन का अध्ययन अमेरिका में समलैंगिकों गैर–प्रजनन, गैर–भौतिक और प्रतीकात्मक संबंधों पर रोशनी डालता है।

यह जीवविज्ञान, आनुवंशिकी और विषमलैंगिक यौन–संबंध आधारित परिवार की संकल्पना पर सवाल खड़े करता है।

मर्जी से बनाया गया परिवार इस तथ्य का एक उदाहरण है कि जैविकता ही नातेदारी की एकमात्र चारित्रिक खासियत नहीं है। रक्त और वैवाहिक संबंध के बिना भी लोग परिजन हो सकते हैं। ऐसे पारिवारिक व्यवस्थाओं में नातेदारी, प्रेम और स्थायी एकजुटता पर आधारित होता है। इसके अलावा, यह विषमलैंगिकता आधारित प्रजनन के विचारों को भी नकारता है। परिवार को केवल प्रजनन की इकाई के रूप में नहीं देखा जाता है बल्कि यह गैर–प्रजनन इकाई भी हो सकता है। इस तरह के पारिवारिक संबंध मर्जी और प्रेम की विचारधारा पर आधारित होते हैं और नातेदारी के जैविक मॉडल के ठीक विपरीत होते हैं। इसलिए पसंद के परिवार नातेदारी के जैविक रूप पर आधारित विषमलैंगिक डोमेन पर सवाल उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में उभरे हैं, जो समलैंगिकों की सहायता और सुरक्षा में विफल रहा है।

8.5.2 लिव–इन संबंध

लिव–इन संबंध, विवाह द्वारा परिवार बनाए जाने की परंपरा से परे जाकर साथ रहने की व्यवस्था के रूप में पसंदीदा तरीका बन कर उभरा है। लिव–इन संबंध एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत दो वयस्क बिना विवाह किए भावनात्मक और यौन–अंतरंग संबंध में लंबे समय के लिए स्थायी तौर पर एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं। विषमलैंगिक और समलैंगिक दोनों ही तरह के जोड़े इस प्रकार के संबंध में रह सकते हैं। लिव–इन संबंध को दुनिया भर के शहरों में युवा पीढ़ी द्वारा ज्यादा तरजीह दी जा रही है। के बीच लिव–इन संबनद्ध रिलेशन को प्राथमिकता दी जाती है। ऐसे कई कारण हैं जो लिव–इन संबंध के चयन की ओर उन्मुख कर सकते हैं। इसकी बुनियाद किसी व्यक्ति के अपने साथी को चुनने की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार में है। कई लोगों के लिए यह विवाह से पहले आपसी सामंजस्य का आकलन करने या आर्थिक तौर पर मजबूत होने के एक उपाय के रूप में भी उभरा है। कुछ को इससे विवाह में होने वाले खर्च से बच निकलने की सहूलियत मिली है। इसके अलावा, यह उनके लिए भी एक विकल्प के रूप में उपयोगी नजर आया

है जो कई कारणों से औपचारिक तौर पर विवाह कर साथ नहीं रह सकते हैं। उदाहकरण के लिए, समलैंगिक, अंतर्धार्मिक या अंतरजातीय जोड़े आदि।

हालाँकि, लिव–इन संबंध को कई लोग अनैतिक और उन्मुक्त यौन व्यवहार को बढ़ावा देने वाला मानते हैं। ऐसे संबंध को विवाह और परिवार रूपी पारंपरिक संस्था के लिए खतरे के रूप में देखा जाता है। इसके अलावा, इन संबंधों से पैदा हुई संतानों के भविष्य के कम सुरक्षित होने की तरफ भी संकेत किया जाता है। संक्षेप में, इन संबंधों को जायज रूप से विवाहिता पत्नी और उसके बच्चों के लिए खतरे और विवाहेतर संबंधों को उकसावा देने के रूप में देखा जाता है। इस तरह के संबंधों को चिकित्सकीय आधार पर भी चुनौती दी गई है और इन्हें एचआईवी/एड्स के बढ़ते मामलों के लिए जिम्मेदार बताया गया है। लिव–इन संबंधों को विवाह पर आधारित संबंधों की तुलना में बहुत कम समय तक चलने वाला माना जाता है क्योंकि उन्हें खत्म करने के लिए कानूनी सहारा की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि लिव–इन संबंधों और उनसे पैदा हुए बच्चों को कानूनन मान्यता दी गई है, लेकिन ये बच्चे हिंदू पैतृक सहदायिक संपत्ति (अविभाजित हिंदू संयुक्त परिवार में) में हक का दावा नहीं कर सकते। वे केवल माता–पिता द्वारा अर्जित संपत्ति में में हिस्सेदारी का दावा कर सकते हैं।

8.5.3. सरोगेसी परिवार

'सरोगेसी परिवार' शब्द का इस्तेमाल ऐसे तीसरे पक्ष (आमतौर पर एक महिला) की मदद से बने परिवार के लिए किया जाता है, जो बच्चे के लिए अपनी कोख किराए पर देती है। सरोगेट को फर्टिलिटी क्लिनिक के साथ यह कानूनी अनुबंध करना होता है कि बच्चे के जन्म लेने के बाद उस पर सरोगेट का कोई दावा या उसके साथ कोई संबंध नहीं होगा। सरोगेसी परिवार भी पारंपरिक परिवार के समान ही होता है। भेद केवल मातृत्व की धारणा में होता है। यहाँ मातृत्व को गर्भधारण की अवधि से नहीं बल्कि गर्भ को किराए पर देने की क्षमता से परिभाषित किया जाता है। माँ और बच्चे के बीच गर्भकालीन संपर्क के न होने का प्रभाव, उनके शारीरिक और भावनात्मक संबंधों पर नहीं पड़ता है। जैविक/चिकित्सकीय कारणों से

गर्भधारण न कर पाने वालों, समलैंगिक साथियों और बिना विवाह किए बच्चे पालने की हसरत रखने वालों के लिए सरोगेसी अवसर प्रदान करती है।

बोध प्रश्न 3

1. पसंद के परिवार और जैविक परिवार के बीच कोई दो भेद बताएँ।

.....

.....

.....

.....

2. प्रजनन तकनीकी के प्रभाव के कारण परिवार के नए रूपों के गठन को उपयुक्त उदाहरण के साथ चित्रित करें।

.....

.....

.....

.....

8.6. सारांश

इस इकाई की शुरुआत इस बात पर ध्यान केंद्रित करने हुई कि आम तौर परिवार की संस्था को कैसे आधारशिला/बुनियादी इकाई और मानव समाज का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है। इसे अधिकांशतरू सकारात्मक, प्रभावोत्पादक और वांछनीय माना जाता है। हालांकि बाद में इकाई में यह बताया गया कि इस तरह की समझ कैसे परिवार के भीतर गौर करने और इस पर पुनर्विचार करने को हतोत्साहित करती है। ऐसा करने में इकाई ने नारीवादी आलोचनाओं तथा परिवार और नातेदारी की पारंपरिक/पारंपरिक धारणाओं के आधार पर कई मान्यताओं पर उनके सवालों पर विचार किया। ये परिवार में महिलाओं की भूमिका पर हमला करके परिवार की बुनियाद हिलाते हैं। फिर, प्रेम और लिव–इन संबंधों की विचारधारा पर आधारित परिवारों जैसे विभिन्न विकल्पों को पारंपरिक रूप से यौन

दमनकारी पारिवारिक रूपों और नातेदारी पैटर्न के साथ ज़ोर–तोड़ करने के संभावित तरीकों के रूप में देखा जा सकता है। पुनः, इकाई ने सौतेले परिवार द्वारा पेश की गई चुनौतियों की बात की जो दर्शाती है कि परिवार में होना हमेशा संतोषजनक अनुभव नहीं हो सकता है।

इकाई में परिवार के उन विविध रूपों और पैटर्न की चर्चा की गई जो हमें जैविकता के दायरे से बाहर निकलने की अनुमति देता है। सौतेला परिवार, गोद लेने पर आधारित परिवार, पसंद आधारित परिवार, समलैंगिक परिवार दृ ये सभी जैविकता–निर्धारित परिवार और नातेदारी की समझ को चुनौती देते हैं।

8.7 प्रमुख शब्द

घर – घर निवास की बुनियादी इकाई होता है जहाँ आर्थिक उत्पादन, उपभोग, उत्तराधिकार, बच्चों का पालन–पोषण और आसरे का आयोजन और संचालन किया जाता है। घर (घर) आवासीय और घरेलू इकाई है जिसमें एक या एक से अधिक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही रसोई (चूल्हा / चूल्हा) में पका हुआ खाना खाते हैं।

घरेलू समूह – मेयर फोर्ट्स ने घरेलू समूहों को एक हाउसहोल्डिंग और हाउसकीपिंग समूह के रूप में परिभाषित किया है, जो अपने सभी सदस्यों के सबके विकास के लिए आवश्यक संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है।

सौतेला परिवार – सौतेले परिवार को ऐसे परिवार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें माता–पिता में से कम–से–कम एक का बच्चा या पिछले संबंध से हो।

लिव–इन – लिव–इन रिलेशनशिप यानी सहवास एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत दो वयस्क विवाह के बंधन के बाहर भावनात्मक और यौन अंतरंग संबंध में दीर्घकालिक और स्थायी आधार पर एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं।

सरोगेसी – 'सरोगेसी परिवार' शब्द का इस्तेमाल ऐसे तीसरे पक्ष (आमतौर पर एक महिला) की मदद से बने परिवार के लिए किया जाता है, जो बच्चे के लिए अपनी कोख किराए पर देती है।

8.8. संदर्भ

आचार्य, कालिका, (एनडी), 'लिव–इन–रिलेशनशिप इन इंडिया एंड इट्स इम्पैक्ट – ए सोशियोलॉजिकल स्टडी' https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3451288

चौधरी, प्रेम. 1997, इंफोर्सिंग कल्चरल कोड्सरू जेंडर एंड वायलेंस इन नॉर्थ इंडिया, *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, खंड 32, संख्या 19 पृष्ठ 1019–1028।

फोर्ट्स एम, द स्ट्रक्चर ऑफ युनिलीनियल डिसेंट ग्रूप्स, *अमेरिकन एंथ्रोपोलोजिस्ट*, 1953, जनवरी 3; 55(1)रू17–41.

फ्रूजेट्टी, लीना एम, द गिफ्ट ऑफ ए वर्जिनरू वीमेन, मैरिज एंड रिचुअल इन ए बंगाली सोसाइटी, दिल्लीरू ओयूपी, 1993। परिचय और अध्याय 1, संप्रदान रू द गिफ्ट ऑफ विमेन एंड स्टेटस ऑफ मेन, पृष्ठ 1–28

गोपाल, स्वाति (एन.डी.), 'लिव–इन रिलेशन्स', http://www.legalservicesindia.com/article/211/Live-in-Relationships.html

ग्रोस, एम्मा आर. 1992, 'आर फैमिलीज डेटेरिओटेरेटिंग ऑर चेंजिंग?, *एफीलिया*, खंड 7, संख्या 2, ग्रीष्म, पृष्ठ 7–22

कार्लेकर, मालविका, 1998. 'डोमेस्टिक वायलेंस', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, खंड 33, संख्या 27, जुलाई पृष्ठ 1741–1751

लेविन, एलेन.1993, " फैमिलीज वी चूज एंड कंटेम्पोररी एंथ्रोपोलोजी", *साईन्स*, ग्रीष्म, खंड 18, संख्या 4, पृष्ठ 974–979

मिटरौएर, माइकल और रेनहार्ड सीडर, *द यूरोपियन फैमिली*, शिकागो, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1982, अध्याय 1 फैमिली एज अन हिस्टोरिकल सोशल फॉर्म, पृष्ठ 1–21

ओकिन, सुसान मोलर.1989, *जस्टिस, जेंडर एंड द फैमिली*, न्यूयोर्करू बेसिक बूक्स। अध्याय 2, द फैमिली बियोंड जस्टिस, पृष्ठ 25–40

पैगैक, क्रिस्टीन ए, 1990, 'जस्टिस, जेंडर एंड द फैमिली', मिशिगन लॉ रिव्यू, खंड 88 संख्या 6, पृष्ठ 1822–27 https://repository.law.umich.edu/mlr.edu

रहेजा, ग्लोरिया गुडविन और एन ग्रोडज़िन्स गोल्ड, *लिसेन टू द हेरॉन्स वड़्सरू रिइमेजिनिंग जेंडर एंड किनशिप इन नॉर्थ इंडिया*, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996। अध्याय 2, सेक्सुअलिटी, फर्टिलिटी एंड इरोटीक इमेजिनेशन इन राजस्थानी विमेंस सोंग्स, पृष्ठ 30–72.

सोनावत, रीता.2001, 'अंडरस्टैंडिंग फैमिलीज इन इंडिया: ए रिफ्लेक्शन ऑफ सोशल चेंजेस', *Psicologia: Teoria e Pesquisa*, खंड 17, संख्या 2, ब्रासीलिया मई/अगस्त।

शाह, ए.एम. 1968, 'चेंजेज इन द इंडियन फैमिलीरू एन एगजामिनेशन ऑफ सं असंपसंश', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, खंड 3, संख्या 1/2, पृष्ठ 127–134

वेस्टन, कैथ, *फैमिलीज वी चूज*, न्यूयॉर्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, १९९१। अध्याय 2, एक्साइल्स फ्रम किनशिप, पृष्ठ 21–42.

वोर्स्ली, पीटर, *इंटरोडयूसिंग सोशियोलोजी*, हार्मोंड्सवर्थ: पेंगुइन बुक्स, 1984। अध्याय 4, द फैमिली, पृष्ठ 165–209।

.....'एडोप्शन https://www.britannica.com/topic/adoption-kinship

8.9. बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्नों के उत्तर 1

1.आम तौर पर परिवार की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- प्रजनन के उद्देश्य से पुरुष और महिला के बीच एक मिलन – परिवार प्रजनन के प्राथमिक कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से बनता है और इसलिए, इसे पुरुष और महिला के बीच सहवास के रूप में परिभाषित किया जाता है।

- विवाह के माध्यम से जायज संस्था दृ परिवार बनाने के लिए पुरुष और महिला के बीच के सहवास या मिलन को मिलन समुदाय द्वारा अनुष्ठित विवाह के माध्यम से ही वैध बनाया जाता है।

2.परिवार अपने सभी सदस्यों को आर्थिक, भावनात्मक और शारीरिक सुरक्षा प्रदान करने का कार्य करता है।

3.प्रकार्यवादी सिद्धांतों के मुताबिक परिवार की संस्था द्वारा किए जाने वाले कार्य इस प्रकार हैंः

- जैविक रूप से परिवार दो वयस्क सदस्यों को एक जोड़े के रूप में एक साथ यौन संबंध बनाने और सामाजिक निरंतरता बढ़ाने के लिए एक वैध मंच प्रदान करता है।
- परिवार आश्रय प्रदान करता है और खान–पैन जैसी बुनियादी चयापचय (मेटाबोलिक) आवश्यकता को पूरा करता है।
- परिवार एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है जिसमें सदस्य उत्पादक गतिविधियों में भाग लेते हैं; सदस्य समान या भिन्न कार्य कर सकते हैं।
- परिवार में व्यक्ति की उम्र, लिंग और स्थिति और यहाँ तक कि व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर घरेलू कार्यों का विभाजन किया जाता है।

बोध प्रश्नों के उत्तर 2

1. सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के मुताबिक परिवार के पारंपरिक सिद्धांत दो चीजों पर केंद्रित थे, पहला परिवार की घर से तुलना और उससे भेद करने के देखना और दूसरा औद्योगीकरण के प्रभाव के कारण होने वाले परिवर्तनों की पड़ताल करना। सांस्कृतिक सिद्धांतों ने उक्त धारणाओं में विस्तार लाया। उन्होंने जैविकता और परिवार से पारे जाकर परिवार की कल्पना की। बच्चों को अब परिवार के लिए आवश्यक पूर्व शर्त के रूप में नहीं माना गया और पारिवारिक संबंधों ले दायरे में दोस्तों को शामिल किया गया।
2. ओकिन (1989) का मानना है कि परिवार जो कि समाज की आधारभूत संस्था है, में न्याय का स्पष्ट अभाव है। वह विस्तार से बताती हैं कि विवाह और पारंपरिक पारिवारिक संरचना में महिलाओं की निर्भरता, शोषण और

दुर्व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है। उनका काम हमें पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं में श्रम के असमान विभाजन पर सवाल उठाते हुए लैंगिक असमानता के बारे में जागरूक करता है, जहाँ महिलाओं को घर सँभालने और बच्चे के पालन–पोषण की गतिविधियों में लगना होता है और पुरुष कमाई का काम करते हैं। इससे पुरुषों पर महिलाओं की आर्थिक निर्भरता बढ़ जाती है और इसलिए, उनमें से कई तलाक से डरती हैं तथा हिंसा और दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं।

बोध प्रश्नों के उत्तर 3

1. जैविक परिवार के गठन का आधार रक्त की साझेदारी और विषमलैंगिक मिलन है। इसके विपरीत पसंद के परिवार समलैंगिकों के बीच प्यार और एकजुटता के आधार पर बनते हैं। उनमें प्रजनन गौण रहता है। दूसरा अंतर यह है कि व्यक्ति जैविक परिवार में पैदा होते हैं, इसलिए यह जन्म के समय ही बनता है। पसंद का परिवार तब बनता है जब व्यक्ति बड़ा हो जाता है और अपने भावी परिवार के सदस्यों का चयन करने में सक्षम होता है।
2. नई प्रजनन तकनीकी के आने से प्रजनन और परिवार के विस्तार नए अवसर मिले हैं। सरोगेसी परिवार ऐसे ही अवसर से संभाव हुए परिवार के नए रूप हैं।